

२ अक्षर यज्ञ ॥

ASHA ARCHIVES

अक्षर यज्ञ

902

ASHA ARCHIVES

[illegible]

तथ न ह नक्षत्राः कुं जी रवः
 काट क वृत्तिः लं धा लं दि
 लं डाहाः लं धा पूर्ववत् ॥
 ५ ॥ ॥ ॐ तिर्यं च वा नू
 ६ ॥ रू म्म माल र्क ५ ॥ वि
 श ग वा अ वि श ग वा स लु
 य लि का वा य नू लं म नू लि
 निवत्ता यं च वा नू लं वा
 क न स्र य ल य ॥ ० ॥ ० ॥

विविध कल म यू जा
 धन क ॥ जा य सु ग य म्म
 न धन क ॥ ॥ यथा कर्म
 स लं लं य माल ॥ ॥

यथा कर्म स अट या ऊ यं च
 वा नू लं लं डि या म्म उ ऊ लं न
 य न्म क्थं का दि दि नि नः
 निर्म क्क न व लि धन का द
 अ क ० स्र मि क वा या व धि
 त य ॥ वं धू लि र्थं क्क स्यं त य
 वं त स्नान सि धु ऊ ऊ म
 का त ॥ त स्मि नू यू ऊ न वा
 क्क लं न ॥ ॥ ॥

ॐ अयादि ॥ अया र्थं य ऊ मा
 न न यू य स ऊ न स्र ५
 ७ ॥ यून ४ वा क्क लं न स्र य

का न य ७ ॥ ॐ अयादि ॥ य ऊ
 मान स्र य था ऊ ला ध्र य वा दः
 स्र य ना र्थं क्क लं धी स्र य य अ
 धि नि म ४ ॥ ॐ अया क्क ॥ गु नू न
 स्र य ॥ ॥ र्थ स र्द त स्र य अ र्थः
 या ग या य ॥ न्या सार्य या ग यू ऊ
 ॥ अल यू ऊ र्थ ॥ ॥ त त ४ वा
 क्क लं न यू ऊ न ॥ यं च वा नू लं
 रु नि वा अट या या ऊ यं च म्म
 ता दि स्नानं का न य ७ ॥ स्र य
 वं द न र्थं च म्म त स्र ॥ ॥ क्क
 म्म द ता सा माल र्थं च म्म त न
 स्नान म द ता सा म्म माल ॥ ॥
 यून ४ व न्द न सि न्द न यू य
 य क्क य वी त ॥ स्र य वं द न ॥
 ता ता द्वा ना र्थं न यू ऊ न ॥

ॐ ता ला या मा ति द्वा ना र्थं ॥
 स्र य ० ७ ॥ ॥ ता ता
 अ न य र्थं स्र य ७ ॥ ॐ क्क
 स ४ क्क म्म स ना य २ ॥ ॐ क्क
 म्म म्म य २ ॥ ॐ कां क्क द या
 य २ ॥ ॐ किं जि न ५ २ ॥ ॐ
 क्क जि न्वा य २ ॥ ॐ क्क न ग
 य या य २ ॥ ॐ क्क ४ अ स्र य
 २ ॥ ॐ ति व र्थं न यू ऊ ॥ क्क
 रु न्म क्क ॥ न गु लि क्क ता
 लि क्क ॥ यून ४ यू ऊ न ॥

कामः क्षिप्रं नन्द ददित्वं
सर्वदा तृप्तिः । श्रुमिन्नका
सदा कार्या कृपयैव वनेः
लेया ॥ यावच्च त्वं सूर्य
त्यभदिनीसफुसागनाः
यावदाकाशगमिव ता
वत्त्वितुमिभारव ॥ ॥ श्रु
गर्गधदि ॥ १ ॥ ॥

नेष्टुत्तुहडा ॥ ॥ उं हं सः
कृमसि नोय २ ॥ कोमसु
य ॥ ॥ उं कोमसु कथि २ ॥
उं कां ह दया दिवत्तु (गण
युजा ॥ ३ ॥ तद्द्वै कूरु सु
य ॥ मृत्तिकया दृष्टी कृत्वा
सुय ॥ तता हूँ सुयुग्म क
नखलिका (धूमरेखेन सु
य ॥ उं ह दायै २ ॥ उं ह द
मृत्तय २ ॥ उं ह द दया दि
वत्तु (गण युजा ॥ ३ ॥ वद
॥ उं ह द (धूमरेखेन सु
ह दानातिः सहगरुडाश्र

धनः । रुद्रा उत यही सुयः ॥ ॥
चंदनादि युजा ॥ सर्वं पूर्व
वे ॥ ॥ वा ॥ उं ह द
सर्वदा रुद्र पूसादिता व
हं सदा । श्रुयुदा कामदा
दवि ग्रीयदा सर्वदा रुद्र
॥ यावच्च त्वं सूर्य
भदिनीसफुसागना । या
वदाकाशगमिव ताव
त्त्वितुमिभारव ॥ श्रुगर्गध

॥ २ ॥ वायो ॥ जया सुयनमा
सुह ॥ श्रुयु क्री दि पूर्व
वे ॥ ततः कृमसुयने ॥
उं हं सः कृमसि २ ॥ उं कां
ह दया दिवत्तु (गण युजा
॥ ३ ॥ तद्द्वै कूरु सुय ॥
मृत्तिकया दृष्टी कृत्वा ॥ ॥
तता हूँ सुयुग्म कनखलि
का (धूमरेखेन सुय ॥ ॥
उं जयायै २ ॥ उं जया मृत्त
य २ ॥ उं जां ह दया दिव
त्तु (गण युजा ॥ ३ ॥ वद
॥ उं हं जतं सनउत ॥ च

सङ्कोमीसनाय २ ॥ उंको
 म्मिर्मथ २ ॥ ॥ कृष्णसुथ
 ॥ उंकोददयायदिमउं
 नेयूजा ॥ ७ ॥ तद्द्विर्कृष्ण
 सुथ ॥ मृत्ति कयादृष्टीकृ
 त ॥ तन्नाष्ट्रयूग्मकनस्व
 लिका ॥ अमूर्धनसुसुथ
 ॥ यूनः यून ॥ उंयूय
 २ ॥ उंयूयुर्मथ २ ॥ उं
 योददयाय २ ॥ ल्लादिप्र
 उंनलीयूजा ॥ ७ ॥ वद ॥ उं
 समददबाधियास ॥ वन्द
 नादियूजा ॥ वाक्कननयउ
 माननकुमिनप्रठयाधि
 स्थितिरुज ॥ वाक्क ॥ उंयू
 सुल्लिवमहाविश्वसर्वसु
 लुजक ॥ ७ ॥ सर्वसुलुमः
 वायुयूपककुरुसर्वदा ॥
 यावदुत्तमसुथ ॥ मदि
 नीसकसागना ॥ यावदाकाः
 गंगमवतावर्त्तुहिरु
 व ॥ अणुगंधादि ॥ ७ ॥ यउ
 माननलाजाहलाहिथ

कप्रथ्याहिथक ॥ अत्रतिय
 तिथो ॥ ॥ यउमाननयाद
 लयनल्लयसुथयिस्थः
 ताथसुवन ॥ ततः वाक्क
 दिदकि ॥ नदलायउमान
 न ॥ वावनसुगुथ ॥ ॥ वा
 ऊलनयासलिकयसुथ
 साकि ॥ थय ॥ ततः उमा
 नयादिसकलल्लकलगाहि
 थकवियुवन्दनसिद्धज
 सुगु ॥ सीदीददलो ॥ ० ॥
 बलिल्लनकउसुथ ॥ ० ॥
 उंतिदूयादिउलाथीययाद
 लयनविधि ॥ समाप ॥ ॥

यादल्लयनमयातसा नागर्म
 उलनागका ॥ उंयकत
 य ॥ ययवातु ॥ हनिया
 नयुतिल्लकदुग्गा ॥ थरु
 निवातय ॥ यकलिसुग्गु
 थरुलियासुग्गुतयमलि
 क ॥ नल्ल ॥ याकलिसुग्गु
 थतय ॥ मतिमिउल ॥ २ ॥
 यकलिसुग्गु ॥ थतय
 यद्वाग ॥ ३ ॥ ॥ वकलि
 सुग्गु ॥ थतय ॥ वदल

मूलतः ॥४॥ मूलकं उया कृव
नं कृम्वतय (धाय हन
भाउ मीरव कृद क उलहि
यति तय व मा कृगु
लिश्माल तय नागधय ति
यववात्र ल क निवायति तय

नागधय सुधन जल लय
ल उहायल ग्वउ र ना
मध ग्वउ वलन कृउ
मधमिवा धतसय रतलवा
न याधन मनिद धततल
गुलिधन ॥ ॥ तलया लक
॥ कनक कृलि धनील यद्रा
गं वमीकि क उता निर्य वतला
नि सर्वकार्य य था उय ॥
वलल कृ सु नद जल तय
॥ लकि ॥ सुवधुन उनी वेद
विदुर्म मूकि मववा यद्रा
गं सवेइ यीरावती वड मवव
॥ मनय रसमा मूक नव न
तानि वेवदि ॥ ॥
नाग
ओषधि इ धन ॥ नागधो ग्वउ
वत्र लक उ ग्वउ यव
वात्र लरु निवा ग्वउ उ धति
सं धन ॥ ॥ नागओषधिया
विधि ॥ बाल नूय कंगल य

अकंगल धियं गु कंगलरु
वहा र्थक अगुलि कलक
क म कर्कश गीयल कल
न धत नूनया हाव इ धन

ध यववात्र लरु निवा ग्वउ उ
यति लक कृ दय कृ इ मद
यकृ इ मद यकृ सा यजाया
यममाल दयकृ सा यजाया
यमाल नागमधुल यजाध
लुदुर्न यजाया य उकन
ध धु माल ॥ ध र्थ निवा था
वक माल चूर्ण ममाल पुस
कन नागकृ म् ग्वउ व
त्र लक उ वि धि धि था वक
वेव कात्र ल नागकृ म् मा
ल नागय उ निन दय क
नागयात तिन इ ॥ य य
टमाल वत्र ल कृ ग ता यिद

तत तीर्थया दिन अग्निद
धुदन नागमी उल दिनवा
क तय उलक उया वडा
द ध उल कृ सु मऊता
ध थाय यतासन नाग
मधुर्म थाय आय टियल
थाय इनेय लय टियाय
वत्र लयात ध अग्निद
याददन क यलात य

नागमलुलस्यस्यतिर्वैधाय
तिस्रश्चनननागमय ॥ यद्वलि
यतिसवास्कि २० यो धायति
सककोटिकाया धायतिसय
मनागम ॥ यद्वलियतिसमहा
यम ॥ य धायतिसर्ग ॥
॥ यद्वलियतिसकलि ॥ ८ ॥
मध्ववर्णगयवायकथम

वहल उगलरुल इइरु
यवसानवाहल गीरु आ
कते हायवहाम् मयकलि
मलिलान धर्त इधन
नागमयर् रुनिचार् वरुण
कउसं इना ॥ ॥ ॥

दधमनागकाउयार्तयू
उमालगुकिर कयावलर
आहिंयार्तयू उमालगुकि
॥ कयावल ॥ उगुलिधाल
सुउमाल कयावलतय ॥

मूलकलुयाकवनत्रउमलु
लकसथालसयाय कलुवि
ककम कयूल धीखलु ध
यतानाय वग नलाय थाल
सयादाव धेलीं गीलाकानना
गनउमलुलवाय ॥ धथस

यत्रमृनिखडन दायक धन
धि कधीलवाय दानेनदाय
क धडसयायति यत्र वाय व
धआदिन ०० गानल अनका
द्विलिकयर्चनीत धयत्रय
तिमुडनदायक धनीधिध
कयाय दाने यकयायकास
यर्कवारुण दधसकूर्क १ य
ववारुण धनधिदानस ०० द
दिर्क १० धनयिनागर्धवाय
धनधिदाने सवालान दायक
दधसुनिस वरुण अक
नलवाय धर्तवायविधि ध
मलुलगायिद कायलनवाय
हि इमसयईन धधलिल
मूलनागकाउयाकवनना ॥

जिवलीदि आदिनमालकवाय
इनमावर्णाय ॥ उलयतिष्ठ
यकविधिनिश्चय ॥ ॥
आदीयकमलुययानेर्तल
कोलस विभ सूर्यार्धयारक
यउमानन ॥ वाक ॥ उं अया
दि ॥ यउमानस्य अमृक उ
लाग्रय उल जाग्र उलय
तिष्ठानिमित्तार्थक उं गीस
याय अर्धनम ॥ उं माहा
धकार ॥ ॥ ततोमलाय

कमोवाय ॐ दमासनादि
युष्म २॥ चर्वयोदाय २॥ क
त्वा ॥ स्वयादयम्मान ॐ द
ॐ ति ॥ वायविधि ॥ ॥

ततानेर्मलदिजिहा (ममूला
वाय ॥ वलिद्वय दद ७॥ य
वाक्यचलस इङ्गयाव वि
या ॥ ॥ अश्यादि ॥ यउमा
नस्य सर्वविद्य निवात्र ॥ अथ
वलिदानक ॐ श्रीसूर्याया
यशि ॥ गुत्रनमस्कारे ॥ न्यास
॥ अथयागयुजा ॥ अथय
जा ॥ ॥ ततावलियदानी ॥
ॐ सर्वविद्य दत्तस्य ॥ सर्व
रुतस्य ॥ वलि मद्रुखाहा ॥
ॐ कथाभियरुम्याभियतय
मल ॥ वद्रुकाजिलीस्य ॥
सर्वसादवस्य ॥ वलि मद्रु
खाहा ॥ ॥ यून ॥ वदनयूउ
नी ॥ ॐ यत्तयतायावकान
ॐ यरुतानामभियतया ॥
ॐ नमोसुसर्थस्य ॥ ॥
ॐ सर्वविद्य निवात्रय २ उ
लयरुजकाद्व २ ० ० ॥ ॥
वन्दनादिधूय दीय जाय।

स्मा ॥ ॐ पूर्वदक्षिण ॥ यज्जि
मालानसर्वदिमादा श्रित
रुत ॥ ॐ वद्रुकरुत रुमवती
इर्नदिलेवनाथनायव ॥
ॐ नमस्तुमादिदवस हि
ती ॥ साकारिर्मतायरीहा नि
लीनमामिसातीवत्यादिय
जात्रिती ॥ अथनेधदि ॥ ॥
न्यासत्रिकायाव वलिविस
ऊन ॥ उलरु मित्रामयित्वा
ॐ निद्रिय ॥ ॐ नमस्तु
नदद ॥ ॥ ततावाद्रु ॥
न उलयरु मिताधन ॥
यक्रमलुययानेर्मलद्रात्रस
वादाव अद्रुत ॐ कायका
कायाव नागया अरुमनु
यत्रयाव मलुयसहाल ॥
वाद्रुल्लु उलयमलुयद्रु
य ॥ वाद्रु ॥ न नागया अ
रुमनुयलयाव सतान ॥
इर्ल्लुनहाय ॥ ॐ व ॥ अ
कायद्रु ॥ उलयमलुयस
हाय ॥ ॐ ति वलिवियरुमि
॥ धनविधि ॥ ॥ अति
याय अरुहायादि उलयसा
दिनयद्रु नसा ममाल ॥

दवताय २॥ ॐ नमो देवी ॥
 म (ध्रुव) प्रयाग ॥ ॐ वृक्षः
 (१२) ॥ ॐ वृक्ष यज्ञान ॥
 सुकर्ता धिय ॥ मय जीन उ
 यल यक्ष १० ॥ ॥ धर्मि
 दिन काया द दू दया वाया
 कथनं वृक्ष याग सत ॥ व
 द ॥ ॐ सर्व यामि सुमाय अ
 यधी हि ॥ सुमाय या न सन ।
 स ८० ॥ व दती ऊ मती हि
 ४५ श्रुता ८० सम ती मू ध्रु
 मती हि ४५ श्रुती ॥ ॐ ००
 द ८० रुदि ॥ ॥ वाय व द ॥
 ॐ ऊ नय ले त्वा सी जो मि उ
 म (ने) रि उ म नि धाम या ००
 य त्वा य मी सि वि न्ध य नू नू
 यथा उ नू यथ सा नू त य नू
 यति ४५ यथ गाम निरु त्व य
 मा हि ० सी द व स्त्वा स वि
 ता सु य य नू वे रि वि धु मि
 ना द ॥ ॥ सर्व वा (ध) ॥ दू वा
 नि व र्म ॥ दू वा अ नि र्म ॥ दू
 वा य ऊ मान य नि र्म ॥ ॥
 तता (म) म य लि गे य ऊ न ॥
 लं य न लू य ॥ ॐ स्व स्ति न ००
 डा ॥ वं व गं य न ॥ ॐ य य

४५ धिया ॥ (म) म य लि गे य
 वन्दन-हि नू य य क्ष य बी त
 पू यः ध्रु य-दी य-जा य-स्म
 ७ ॥ ॐ नम ४ नि वा य मी ना
 य ति ॥ अ नू न धा दि ॥ ॥
 अथ या दू (ले) न-य ऊ मान
 या त यं व गं य य वि य-स्व हि
 क स र्द सा व दं ता या द ॥ थ
 म नि हा य ॥ य ऊ मान या त
 दू ग नि य वि या व नि पा ला
 हा त स रु न दं ता या द-वा
 दू न न यं व ग वि य ॥
 व द ॥ ॐ वा र्च त लु न्ध मि
 पा र्च त लु न्ध मि व दू र्म लु
 न्ध मि (ध्रु) र्च त लु न्ध मि
 ना रि नं लु न्ध मि म धु नं
 लु न्ध मि या य नं लु न्ध मि
 व रि णं लु न्ध मि ॥ नः
 लु द्वा व वा च कं ला हा त सि
 त कं ॥ प्र न ४ द द ॥ ॐ म
 न रु आ प्रा य तां वा र लू आ
 प्रा य तां वा र लू आ प्रा य
 तां व दू लू आ प्रा य तां य
 य दू र्च य हि ती त लू आ प्रा
 य तां त लू लु ध्रु दु म म हा
 स्व अ य (ध) रा य ४ स्व स्व

= १ (ध्रु) र्च त आ प्रा य तां ५

धितमेन ० हि ० सी ॥ ॥
 मालकसं वियधून काव वा
 मूलन गियू जाया य ॥ ॥
 उह वीहि तं वा दूलहा
 यकं तयं वयू ऊर्न ॥ उह
 दधूस ॥ उं ॥ कि काय नि
 वासु मूर्त्तय नमः ॥ वद ॥
 उं वक्रय हानं ॥ वीहि उ
 वस ॥ वदयू ऊर्न ॥ उं नमः
 शं वाय व ॥ त वाख वसु ॥ व
 दयू ऊर्न ॥ उं ली उ विष्ट दा
 ॥ वीहि हल ॥ उं वीह य
 म ॥ त वा हल ॥ उं म ना ह
 मि ॥ ॥ अर्थ या य वा म्र न
 न स्व वलान जानं निवर्त्त
 जान उवन उरि नय
 दाव कल ग द व न ॥ उ
 रु कल ग लि व न त य ॥
 नम य लि ग अ नि का ल
 सत य ॥ ॥ ॥

स्य अमृ क य ला ध्र य य ति ष्ठा नि
 मि त्व र्थ नि व र्ग कि मे ला शी व
 न नि त्व र्थ शी सु र्ग या र्थान म
 शा मा हा न्ध का न ॥ ॥ पू जा रु ति
 लि चि र्थ कं त ॥ उं सि क्षि न सु
 क्रि या न म् ॥ ॥ वा म्र ली न
 पू न सु र्ग य कं त य ॥ उं अ
 या दि ॥ उं अ द ध ॥ पू य य दा
 नं ॥ गु रू न म स्का र्ण ॥ उं अ र व तु
 मी ॥ ॥ न्या सा र्थ या य पू जा ॥ अ
 ल य जा ॥ ॥ त त ॥ नि व र्ग कि क
 ल ग य ऊर्न ॥ नि व र्ग कि क ल
 ग य ॥ उं द मा स न न मः ॥ पू र्ण
 न मः ॥ उं त ला जा मि ॥ अ रू
 र्ण ॥ उं द व स्य ला ॥ उं रु न
 सि रू मि न स्य दि ति न सि वि र्थ य
 या वि र्थ स्य रु व न स्य य गी ॥ य
 धि वि र्थ य कृ य धि वि र्थ ० रु
 य धि वि र्थ मा मा दि ० सी ॥ उं स
 क य ऊर्न ति ॥ उं स्या ना य धि वि
 उं व ला नि ॥ उं द मा द वी ॥
 उं अ मि ॥ धू य दी य उ य
 ला य ॥ यि गूल नी ला य व रु
 धि ता लो स र्ग य का मा रु ल
 दा यि नी तो ॥ उ मा म ह लो म
 नि व नि तो को वा र्ग ग रू मी

त ता नि व र्ग कि क ल गी व
 न ॥ ॥ त ता य ऊ मा न य त न
 मि व क स्या न न कृ य क धून
 वा य क स्या न जान कं त ॥ ॥
 उं अ या दि ॥ वा म्र ॥ य ऊ मा न

त०॥ सिद्धमू०॥ श्रीं ध्यत॥ ॐ
स्वस्ति नमः ॥ ॐ ॥ धूप दीप
नवय ॥ यतिष्ठा ॥ ॐ मना हू
ति ॥ सुगया यमालक पूजा
धूपका इति ॥ अंगमन्त्रादि ॥

ततामलानां अवाकलनाना
मम हुला ॥ ॐ मेला सुश्रांर्घ्यं
श्रीं ॥ अयादि ॥ यजमानस्य
यथा उला धयपतिष्ठा निमि
लार्थनामम हुल पूजा निमि
लार्थं कर्तुं श्रीं सुश्राया ध्यानम
॥ ॐ श्रीं हू ॥ अर्थ २ ॥ गुनः
नमस्कारं । न्यासाय वागपूजा
नं ॥ ॐ व ॥ अस्माय रुति क
न्यासनं अर्गं न्यासं कायय ॥
अर्घ्याय पूजा । अस्मपूजा ॥
ततावदावेन ॥ ॐ तत्त्वायामि
ॐ दयस्यत्वा ॥ लंखनदाय ॥
ॐ तमनेश्वरि ॥ ॐ रुतसि
रुमित्रस्य दिति त्रसि विष्णु
या विष्णुस्य रुतनस्य धनुः ॥
पृथिवीयन्तु पृथिवी ॥ ॐ
हृदय विधीमा मादि ॥ ॐ
सक ॥ ॐ स्नानाय विधि ॥

ॐ यत्ना विष्णु ॥ ॐ द्यामादवी
ॐ अमिन्ने विन्द ॥ ॐ वक्रयन्ता
ॐ ॐ दं विष्णु ॥ ॐ नमः ॥ अमुका
ॐ अया अस्मान् ॥ अतस्त्वय
नपूजा ॥ वल ॥ ॥ ॥

अथ यापति सतया नागर्घ्यं
जायादहयपूर्वं नित्यं ॥ ॐ अ
नन्नाय ॐ दसा सननिम ॥
वतस्त्वानेजा दतया । ध्यान ॥
ॐ अनन्नाय कायय । सिताय
कजमोलिक ॥ गेरुलां चित्त
मूक्षाय । वक्राताय लावनः
चापननाय ध्यानपूर्य २ ॥ ॐ
मंगाय २ ॥ ॐ महां ॐ ॐ ॐ
यवा उसाय ऊं न्या वृष्टि मा
वह । सामवत्सस्य वाव ॥ ॐ
ययाम गृहीता सी लायत्वा व
तया निमिन्नायत्वा ॥ ॐ द्याः
ला ॐ द्याय २ ॥ ॐ समूर्ध्वं उवा
सलिलस्य मधनाय नायनु
नविष्णुना ॥ ॐ द्याया वकी वृ
षहा वलाट अयादवी विहमा
वहनु ॥ ॐ ॐ वदीयाय २ ॥ ॐ
अवह तनिर्गुण ॥ ॐ दं अ
नन्नाय अनन्नाय कथं २ ॥

ॐ ह्रीं तं क काय द नु जा दः
 वी स हि ता य २ ॥ य वा क व लि
 स स र्ग न ३ ३ त य । म नु ॥ ॥
 द व द व उ वा च ॥ ॐ तं क का
 ना म ना ऊ स मा ति क व लु
 वे न्ध म लु ल स र्ग ता य व ला
 न रु क्ति कित नाना न ल वि रु
 धि ता का ला न क म य नू य ल
 व र्ष य व र्ष य अ रु ना पा लि
 उ न्त्र उ न्त्र म न्त्र म न्त्र ल ल ल ल
 द क्षि ण दि शी यी स क य म
 य ऊ ने ४ स म क ट ४ गी ल
 सिं हा स न सार ल का र ल ट
 क का ना म ना जा य ० ० ॥ गी
 य न ३ ३ न अ र्घ वि य म नु ॥
 तं क का ना म ना ऊ स स य
 ७ ४ स र्ग यी स र्ग हि ता वा
 स र्ग अ न ये वी स य ना वा उ
 रु य या र्घ ता वा य न स ना
 वा य स ना क या पि ना वा रं टी
 व ट का वा य ल या न का ल
 य था व र्ष ति स र्ग दानी व
 र्ष य व र्ष य ० ० ॥ ३ वी क ट
 क्रि य ७ ॥ ॐ ति अ र्घ ॥ धू य
 दी य जा य स र्ग ॥ ॐ अ र्ति

यी ता म हा का य ४ का य न यः
 ति स र्ग नि रु ४ । न र्ग स र्ग क
 ना ऊ न रु धि ता म्भ नू ला च
 न ४ ॥ वा न्त्र व क्री म म व गि ना
 न ल वि रु धि ता ४ । तं क का र्ग
 म ना मा र्ग स र्ग वि रु म हा
 त ल ॥ य ऊ मा न स य थ ऊ
 ला श्र य ऊ ल या म्भ नि मि ल
 र्थ ट क क ना म्भ न वि रु
 त स र्ग वि धि य वि रु लु मः
 सु ॥ ॐ ति ट क का र्ग न ॥
 ३ ॥ ॥ ॥ ॥

तं ता क क ट पू जा ॥ ॐ क क
 ट क ना म ना जा य वि न का द
 वी म कि स हि ता य ० ० द मा स
 न २ ॥ य र्घ २ ॥ अ न ॥ नी ल
 क क ट क ४ क ४ ४ रु धि वि
 क ट म रु क ४ । अ न्त्र न यो ग
 या य र्ग धा न र्ग य ता य ता
 ४ ॥ अ न य र्घ २ ॥ ॐ का यः
 र्घ २ ॥ ॐ म ना द वी न ॥ ॐ
 य त स वा द स मू द य २ ॥ ॐ
 य त न धी ता म धू ना स म य
 ता वि रु र्ग य न म ल ना म

[illegible][illegible]

ऊलाच्चिसमस्तु ॥ यज
नस्यति ॥ तत्सर्वविधियत्रि
युलुनमस्तु ॥ ऊ ॥ ० ॥

ततो महावदनाग ईर्न ॥
 ॐ महावदनाग जाजायय
 लीतादवी शक्ति सहिता यः
 ॐ दमासनी २ ॥ श्रीना ॥ श्री
 खव (ॐ) महावदनाग मसूक
 कृष्ण गूल ५ कृ। श्री ख गूला
 कुरु विप्र रूषिता मूर्धिस
 ईदा ॥ श्री नैर्घ्य २ ॥ ॐ न
 ॐ २ ॥ ॐ नदीत्य १ यड ॥
 ॐ ॐ रुसमूदाय २ ॥ ॐ स
 मूर्दंगे ०० ननिर्दंगे ००
 ०० दं ० सनिता नंगे ००
 ० मिता वरु ०० गे ००
 ० ला जार्ज ०० ०० रुन्दा
 ० सिंगे ०० या वाय चि
 ० वी गे ०० यरुंगे ००
 ० सामंगे ०० दिव्यीन रु
 गे ०० गिर्बे नान रंग
 ०० ०० मनामहादिय रु
 दित धूमा गे ०० रु स्व सीति

[illegible]

तत्तां शिवया लाईनं ॥ ॐ
शिवया लस्यः स्यनादवी
शक्ति सहिताय ॐ दमास

नैऋतं ॥ पूर्यं ॥ आनं ॥ ॐ मुक्ता
 रुं गी रवया लीत्या हित लंका ध
 भागलं । विषदय्य वला यर्ग गी
 वायाम कलं रवया ॥ आनं
 र्यं ॥ ॐ को मं के ॥ ॐ आ
 यादवी ॥ पुति गृहीत ॥ रुमे
 तल्या नं दुर्ने ध ॥ स्रजला
 उलाके ॥ तस्मै नमः कौ उन
 य ॥ स्रयली म्माति य पूर्यं वि
 रुता यून ॥ ॐ सिंधु सम
 दाय ॥ ॐ समुद्रा सिमन्ती
 गलं ॥ स्रुम्मा यारु न सिमा
 वाहि ॥ ॐ ॥ ॐ प्रक्षु न दीया
 य ॥ ॐ अया ॥ वसमृदय
 स ॥ सुसग ॥ समाहिती । अया
 ॥ वमस्य सुया रसं वा गृह्णा
 न्मरुम ॥ ॐ गी रवया ला
 य स्रयना दवी गी कि स हि
 ता य ॥ ॐ प्रयाक्ष स इ इ तय
 गी रव न मल ॥ दव दव उवा
 य ॥ ॐ गी रवया लो नाम नाग
 नाऊ स्य क्रिय मलु लं स
 रुता य ॥ ॐ मव धु य विग

हामहातऊमहावलनत्वा
 विरुर्णीकितदात्रकसूनम
 ठसठ्ठसुसुअउनकोवथा
 दिग्विरुर्णीनसर्वऊगत
 संहात्रकात्रलीयामबात्रप
 लवर्षयवर्षयर्णीसवयाला
 नामनागनाऊाय ०० ॥ ॥
 अथिव॥र्णीससुडुतयत्र
 यवियनागससमनु॥त
 सनागनाऊससपूनेर्णी
 सहाअर्णीसुडुहिरुवा
 सहाअर्णीउरुययाअर्णी
 वनावापूजसुनार्णीएषा
 नूगर्णीमिनावटीवावटका
 वापुलयानकात्रयथा
 मयत्रुययवर्षयवर्षय
 गिसमूंदानीमपिवर्षय
 वर्षय ०० ॥ इवर्णीकर्तयकि
 य॥००लेर्णी॥भूयदीय
 जायसा॥००इवर्णीदल
 वअम॥सूनय॥यद्रुलाव
 न॥००कनर्णीकितागीवा
 महालीगीसुयीयावान्॥

मरिवालुऊऊऊऊऊऊमहाः
 कात्रुअमीलवानासमृद्धा
 सम्यनाऊलयूऊमहादू
 त्र॥यऊमानस्यति॥तस
 वविधियत्रियूऊमसु॥

ततादूलिवनामर्णी॥ ॥००
 दूलिकेनागनाऊसः विरुर्णी
 दवीर्णीकिसहिताय २॥ अ
 न॥००दूलिक॥दूप्रवर्णीरु
 अर्णीलर्णीसितामसुद॥दीप
 हागकतागीय॥गुरुलक
 लकिता॥अनयूवर्णी२॥य
 लुहागर्णी२॥००उयदुर्णी॥
 ००सागनाय २॥००समृद्धासि
 दिव्वेववाअऊसकयाद
 हिनसिदूअवागस्येअमः
 सि।सदासुतस्यवागीमामा
 सनाकमाधनाधयर्णीयमा
 तिनसुलिमसिनुयधिदव
 यानरुया०॥मिगस्यमात्रु
 व॥००अमृद्धीयाय २॥००
 तनसीतामधूनासमृद्धा

चिन्मयववमधुनाम
 उद्दिष्टः। उद्यस्वगीययसा
 वयस्त्व॥ ॐ हः कूलिका
 य विरुतिदवीशकि स
 दिताये २॥ पूवाकसर्ग
 नवन इतयमनु॥ ॐ
 गीदवदव उवा य॥ ॐ
 कूलिकानामनागनाउ
 स्य ॐ वल्लु पूवियम
 लसैरुता निमीलवदूः
 श्रीमहाविषदालसर्ग
 नरु विरियादादा विम
 गुतावयरुक्षमनिनाल
 कृतसकृदस्य उनसि
 हासनदिदिहाकाक्ष
 यथाययानकालेयऊ
 चमयनवर्षयवर्षय
 तिस्रः। कूलिकानागनाः
 ऊय ००॥ तयथा॥ अ
 र्घवियर्ग्यनमनु॥ रा
 स्यनागनाउस्य पूवेवा
 सरुथावास्व इतिहवा

सरुन्नयेवाउरुययाग्ने
 यथावायुजस्रवा दृष्टान्
 गमिनावावटीवावटका
 वायुलयान्नयनमयन
 यलवर्षयवर्षयविस्म
 ॥ ॐ दानावर्षयवर्षय
 ०॥ इवाकृतपुक्तिप
 ॥ ॐ लय॥ पूय दीय
 जायल्लय॥ ॐ सूदीक
 हागनलेभ्यमल्लितभ्य
 तिरीक्षाम हातिधान
 दहभ्यवलाद्वद्वतक्ष
 यत्र॥ कूलिकानागनाउ
 क्षामहावलयाकमक्ष
 कनाउमहतादृष्टिसूय
 सन्ननरुतल॥ यउमा
 नस्ययथाउलाग्रयउ
 लजाभ्ययतिष्ठानिनि
 मित्वर्थ कूलिकनागना
 नविधितल्लयविधिय
 त्रियुल्लमसु॥ ॐ तिक
 लिकनागनावनविधिः।
 ५॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

ततायैयवात्र लया विधान ॥
 यका लसवा दहं निवासय
 जायाय दतसा म दतसा
 ममा ल ॥ आग्नेयसय ऊर्ण
 ॐ वूं नन्दा ये नमः ॥ ॐ ल
 नो अग्ने वत्र लस्य विधान ॥
 ॐ वूं आग्नेयवत्र लय २ ॥
 पूवाक्ष सदइतय गीवन ॥
 धूप दीप जायस्तु ॥ ॐ
 नमस्तु नकायस हस ॥ अ
 र्गमं धादि ॥ ॐ ति आग्नेयस ॥

१
 नेर्जलका लसहं निवास ॥ ॥
 ॐ वूं रुद्रा ये २ ॥ ॐ सुत नो अ
 ग्ने (सुतसि) ॥ ॐ वूं नेर्जलव
 त्र लय २ ॥ पूवाक्ष सदइतय
 ॥ धूप दीप नेवय जायस्तु
 ॥ ॐ नमस्तु ननक्ति ॥ अ
 र्गमं धादि ॥ ॐ ति नेर्जलार्च
 न ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥

वायव्यसवा दहं दिवास ॥ ॐ
 वूं उया ये २ ॥ ॐ अया ग्नाग्नेः
 ह्यनरिसत्वमित्त्वमया अ ॥

ॐ वूं वायव्यवत्र लय २ ॥ पू
 वाक्ष सदइत ॥ धूप दीप ने
 वय जायस्तु ॥ ॐ नमस्तु
 ननक्ति ॥ अर्गमं धादि ॥
 ॐ ति वायव्यया ॥ ३ ॥ ॥

ॐ नमस्तु ननक्ति ॥ अ
 र्गमं धादि ॥ ॐ नमस्तु ननक्ति ॥
 ॐ वूं विद्या ये २ ॥ ॐ यत गीर्त
 वत्र ल ॥ ॐ वूं ॐ नमस्तु वत्र
 लय २ ॥ पूवाक्ष सदइतय
 धूप दीप नेवय जायस्तु
 ॥ ॐ नमस्तु ननक्ति ॥ अ
 र्गमं धादि ॥ ॐ नमस्तु ननक्ति ॥

४
 म (धु) सवा दहं दिवास ॥ ॐ
 वूं पूरु ये २ ॥ ॐ उद्रुर्म वत्र
 ॥ ॐ वूं म (धु) वत्र लया जाय २
 पूवाक्ष नेवय सदइतय ॥
 धूप दीप जायस्तु ॥ ॐ न
 मास्तु ननक्ति ॥ अर्गमं धादि
 ॥ ॐ तिर्यववात्र लरुद्रिया
 पूजा विधि ॥ ५ ॥ ॐ ॥

० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

[illegible]

वाय २॥ ॐ वितलाय न
 नाय सर्वलोक्य २॥ ॐ सू
 तलाय सफ म वि श्या हला
 य २॥ ॐ नितलाय स
 मूड श्या ता ना काय २॥ ॐ त
 ला तलाय य व न श्या नि न
 ला याय २॥ ॥ त ता रु ली
 का दियू जा ॥ ॐ रु ली काय
 स वि श्या ब ल रु डा य २॥ ॐ
 रु व ली काय ह र्म श्या गू न्य
 धा नाय २॥ ॐ स र्म ली काय न
 क ग श्या ला क ना थो य २॥ ॐ
 म रु ली काय रु मि श्या रु लि
 न २॥ ॐ ऊ न ली काय यृ थो
 यो म लि रु ष लो य २॥ ॐ त य
 लो काय या ता ल श्या स रु स
 मू द्वा य २॥ ॐ स ल्य ला का
 य रु व ४ स ४ रु क्ता य २॥
 ॐ ति व रु द्वा रु व न यू जा
 ॐ यू र्व समू डा य २॥ ॐ द लि
 ली समू डा य २॥ ॐ य नि म
 समू डा य २॥ ॐ उ रु न समू
 डा य २॥ ॐ मा न स मा व न
 श्या २॥ ॐ स फ सा ग न श्या २

शिवा ॐ लि॥ ॐ वरुणाय
 सगं लस्य विवा नं २॥ ॐ
 वरुणाय नागना जाय
 ॐ उया ग कि सहिताय
 न म॥ ३॥ यूवाक्ष वलि
 स३३ गं र्वन मनु॥ श्री
 देव देव उवाच॥ ॐ वरु
 णा नाम नागना जाय
 रा रुहि मरु न्द विगं हं द
 वम लु ल सं रू ता य नाग
 धिना ऊया गं रु स्ता य म वि
 वि कि न ल सो रू रु त मरु
 टा नि स र्वो व य वा नं न त्र म
 छि त न व शु क रू ग लि द
 ग व्र ऊ न र्वा डि री न व सि
 हा स न सारं का न स मरु
 ट स म र्क शु वि म लि रु लि
 उ दि री वि गं हा म हा टा य स
 रु सु रु णा वि रु धि त वि न
 णा वा य हा य वि णा न न्दा य
 न न्दा य ४ य म र्क त ४ अ ०
 प रु य म य वि वा त्रि त वि ग
 हा न ग र्वा णि उ म ॥ म
 लु ल उ र्व कि ति रं हा य

य ऊ न्धा नाम स ल व य क
 ना व रु णा नाम म य न व
 र्वा य व र्वा य ० ०॥ ॐ महा
 वरु णाय नागना जाय ० ०
 ॥ वी उ म नु ॥ ॐ वरु णा
 नी म य ॥ धन वा ॥ व र्वा य
 व र्वा य रू रू रू म रू म रू
 ल ल ल ल रू रू ० ०॥
 यून व पि ॥ ३३ न अ र्वा वि
 य व रू ल क लु स र्वा र्व न
 म नु ॥ ॐ वरु णा नाम ना
 गना ऊ स्य हा र्वा वा स य
 उ र्वो स इ हि त वा स हा र्व
 य रू उ रु य या ॥ र्व र्वा वा
 यून स ना वा ॥ य रू न ग म
 ना वा ॥ य रू वा य रू वा स
 र्व र्वा महा रू र्वि व र्वा य व
 र्वा य ० ०॥ ३ र्व कि री कि य
 ॥ ॐ र्व र्व ग र्व न ॥ य ति
 र्वा ता य न ॥ य रू दी य ऊ
 य रू ४॥ ॐ न ता नि रू य
 मा ना नि स र्व र्व द वा ऊ ना रू
 न ॥ या ऊ नि रू रू व रू
 ग र्व सा ऊ लि ति कि य

॥ यथा हिलिखिता कामान्
 अनन्तादिभिरुङ्गमाः । वे
 र्बयल्लयाने व अहना
 गालिपूर्ववत् । शिगूलेह
 न्यतरुमोयूनयनमहा
 दकोः ॥ तयगर्भमहाद
 कोः । अत्रात्ममहासूर्य । स
 फदीयान्स्वक्कां सय
 यातालपवव ॥ उत्तरकः
 नागयत्सुर्वीलायस्य
 नाचन ॥ नामाउच ॥ द
 वदवउनाथहनदव
 नमास्तुग ॥ परिमार्कर्म
 दत्तसुययसियत्रमं
 पशसुस्तनं गमनं कर्म
 याकास्तुदवयं यहा ॥ ॥
 महन्वत्रउवाच ॥ निर्माक
 विग्रहाः सर्वं यतामूद
 कं यत्र ॥ ॐ त ॥ य ॥ अल्ल
 यादत्तकल्यैकल्ययुः
 युः ॥ अनादृष्टिरुर्वैक
 लं इष्टिक्वानाहीनक
 नागस्तनगर्भकृत्कला
 गंहीनसूयतस्त ॥ वा

कलकविशार्वन्धलीगू
 डवअथापिवा ॥ एकाने
 वल्लुविहिलायूजयन
 वनागकान् । पूजानिक
 य ॥ ० तिलेनवनागयय
 चन ॥ यथावर्षनियुर्व
 वलाकनकनिवारिका
 ॥ ॥ नामाउच ॥ सह
 संजायतस्तुलाय ० दव
 महन्वत्र ॥ यथायलय
 कालेष्टमृक्तीमयनृपि
 न ॥ तदातनेवत्रय
 लोमृक्मियत्रमं
 कार्तिचनवनागस्य क
 लानिकथितं कवि ॥ व
 र्बयामिमहादवयल्लया
 न्कयथास्त ॥ नवनाग
 य ॥ ॐ वत्र ॥ य ॥ ॐ
 यद्वन्द्वसम ॥ कान् ॥ स
 नृपन्ध्रलाचन ॥ मृक्
 टायेष्ट ॥ अहना ॥ सवर्ली
 कालरुषित ॥ महिताय
 कलेनो ॥ यागीरुसाम
 हावल ॥ वत्र ॥ नामाग
 जासीकनृदृष्टिमहीत

लं । अन्ननीलाय वस्व ।
 निवासिनः ॥ निमो वर्य दय
 धेव प्रद्युम्नि ॥ महीधुव ।
 तज्जगत्प्रवक्ष्ये प्रवक्ष्ये
 च नदीधुव ॥ यक्षालिकान
 सुसुवो सुसुमृदय विरवा
 सुव ॥ याता लं प्रयथनाम
 नाजिन्या नाग प्रयका ॥
 वृष्टिं वृष्टं नु स तर्त सर्वश
 धमहीधुव ॥ यय ० नि
 नना निली नाग नाजस्यरु
 मिक ॥ वर्ष निजल दा सु
 य नाग नाज ४ य धी नग ४ ॥
 ॐ नमो सुन नाय सहस्र
 ॐ नाग या धा ल का निली ॥
 ॐ अन्ननील गुण वलानि
 विष्णु वृष धनाय च । नमो
 माहात्म्य दहाय अन्ननाः
 य नमो ॥ सुत ॥ य उमान
 स्य यथ उला धी य उल
 जोरु ॥ नाग मलुला च
 न वि ॥ ४ ग ल स वृन्नि धिः
 य विपुलु म सु ॥ साष्टांग
 य धर्म रू मो ॥ ॥ गत ४

ॐ न्दादि ला कया लसम
 लस्य विवात्र यू ऊर्न ॥ ॥
 ॐ गिना ग म लु ल यू जा
 विधिस्तमाफा ॥ ॥

ॐ नमो वर्य धाय ॥ तत ४ उल
 पुमिष्ठा विधिवद् ७ ॥ तता
 मूलाचार्य लसिहा सन लि
 ला उल या रु कर्म वृथा
 ॥ ॥ या प्रल न सुथोर्ध
 रुता गुत्र सन धा दि न्यास
 ॥ ॐ का व द धे क ना र्थ पा य
 पूजा वन्दना दि ॥ त उल
 ना लमर्न सि वन गिल क
 विधाय प्रथ ॥ ॥ यः
 ग्म वृग मादाय ॥ ॐ महो
 ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ वृग वामरु
 रु धृत्वा ॥ वलिय दान ॥
 प्रयाय वलिस र ३ ग ॥ ॥
 ॐ गल नी ला ॥ ॐ नमो व
 रु धाय ॥ ॐ नमो सु स य
 यो ॥ ॐ सर्व रु पा धिय त
 य सर्व रु त स ४ सर्व ना

(गंगा वलि गुरु २००॥ धू
 व दीय जाय हाय ॥ ॐ नि
 मालि निर्विकल्पति ॥ अरु
 गन्धादि ॥ ॥ वलिविसर्ज
 नं कुरुं क्रिय ॥ ॥ ॐ
 लीं ऊविष्टदा ॥ लाजाय कय
 नी ॥ ॐ व ४ अस्त्राय रुट् ॥ अ
 स्त्र कर्ष ॥ ॐ य द्वा द व द
 ॥ दू (हीन सीमा ऊर्न ॥ ॐ
 वां द द या य २ ॥ पून लीं ॥
 ॐ व ४ अस्त्राय रुट् ॥ कूट लीं
 ॐ व ४ अस्त्राय रुट् ॥ कवय
 नलय लीं ॥ ॐ व क व राय
 दू ॥ ॐ मानस्त्रा क र न ॥
 अस्त्र लीं सीमा ऊर्न ॥ ॐ व
 ४ अस्त्राय रुट् ॥ ॐ लीं म
 र्गिनि ॥ मूल लीं (हीन सीमा
 ॥ ॐ वां व अस्त्राय २ ॥ शि
 लया वृ क र लीं दू (हीन ॥
 ॥ ॥ ॐ य द्वा द य अस्त्राय
 म्वाय २ ॥ द्वा द य लयी
 त द्वा लीं न य द्वा लिय ॥
 ॐ वां द द या य न म ४ ॥

ॐ हिन ल्ध ग रू ॥ हृदय लक्ष
 न्य क य र्णी ॥ ॐ वां हृदयाय
 २ ॥ ॐ सदस्य निम रू र्णी ॥
 हृदय नवी हि क य र्णी ॥ ॐ वां
 हृदयाय २ ॥ ॐ वी हृदय
 म ॥ हृदा कृ ण न विष्णु ना स
 न ॥ ॐ वां हृदयाय २ ॥ मूल
 लक्ष व लु न उ त य र्णी नि धा
 य ॥ ॐ सु व रू ल्ध य २ ॥ श्री
 काली लि रू र्ण ग रू लु म ल्ध
 नि धा य ॥ ॐ हिन ल्ध ग रू ॥
 उ र्ण नि धा य ॥ ॐ तं ऊ सि ॥
 ॐ आ भा ना ग कि र्णा दि यू ऊ न
 २ ॥ हृदा किल क्री मा वा क ॥
 ॐ वां हृदयाय २ ॥ ल्ध ल्ध
 द र्णी रू र्ण नि धा य ॥ ॥

ॐ व नू ली य वं मृ त त ऊ
 नी ल कि य ना य मृ त म ती
 ध्या ला त य ऊ ल म ध्या व नू
 ली ल कि मा वा ह य ॥ ॐ न
 का ह न ॥ यि मृ त य व न ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

[illegible]

सर्वविधिद्वारा ४ सर्वरु
तस्य ॥ सर्वना ॥ गेय ४ वलि
मृदू २०० ॥ अमुल्लेखान्
ली ॥ कवचं नावर्तु ० ली ॥
॥ अमुल्लेखान् ॥ ॥ दा
लीन विष्णु यकथा दशाय
॥ ॥ तता जलमन्त्रे न्या
सं द्रव्या ॥ ॥ ॐ व ४ अमुल्लेखान्
रुद ॥ ३ ॥ ॐ वां अंगुलीयां
२ ॥ ॐ वां तर्जनीयां २ ॥ ॐ
वूं मध्यमाये २ ॥ ॐ वें अना
मिकाये २ ॥ ॐ वों कनिष्ठा
ये २ ॥ ॐ व ४ कनक लयष्ट
ये २ ॥ ॐ तिकनी न्यास ४
तता अंग न्यास ४ ॥ ॐ वां
हृदयाय २ ॥ ॐ वां शिख
॥ ०० ॥ ॐ वूं कवचाय दूं
ॐ वें शिखायै वष्ट ॥ ॐ
वों नगयायै वष्ट ॥ ॥
ॐ व ४ अमुल्लेखान् रुद ॥ ॥
ॐ आधा अस्मान् ॥ यू ऊर्न
॥ व ४ संस्कार मूल ले नि
नीकली ॥ कवचं नावर्तु ०
नी ॥ नै उनामृती कनली ॥
मूलने यू ऊर्न ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ वरुणाय नमः ॥ मीरवः
 म ॐ तीर्थलिंगवतस्यै नमः
 वायु स्यात्कायाय वरुणाय
 यालकाय वरुणाय ॥ ॐ य
 धी आय आत्मा आय य ऊ
 नी आय अकी कृत्य ॥ ॐ म
 यि मृत् काम ॥ य ॥ य ऊ मा
 नस्य यथा ऊला यथा ऊ
 लया ऊ यति छासू मृदू
 तमसु ॥ ॐ ॐ म म म म
 यम् ॥ मूल ल वी र्य वरुणा
 डकि मर्कट सम ॥ सर्व
 वाक्कलासु लिख्य ॥ ॐ
 ॐ नि ऊ ल सु य न ॥ ॥
 ॐ सु ल व का ॥ ॐ व ॥ ॐ
 य रु ॥ ॥ सु न य ता ॥
 ॐ म म म लि ता ॥ ॐ वें क व
 या य इ ॥ क व व न ता उ न ॥
 ॐ य धु दि वि ॥ य वि उ क
 श य रि न त ॥ ॐ य ॥ य दा
 य ॐ द मा स न ॥ ॐ ल
 ना अग्ने वरुणास्य ॥ ॐ
 य इ र्व दा य ॐ द मा स न
 ॥ ॐ स ल ना अग्ने ॥

ॐ साम वं दा य ॐ द मा स
 न ॥ ॐ अग्ना ॥ ॐ ॥ ॐ
 अथ र्व वं दा य ॐ द मा स
 न ॥ ॐ य तं स त ॥ ॐ
 नि व दि ल्हा य न ॥ ॥
 म ॥ स यू जा ॥ ॐ वूं वरु
 णाय ॥ ॐ दा दि यू ज न
 ॥ ॥ ॥ त ता व क्रा य धी
 त यू ज न ॥ शिवा म कुं
 ध धी त य त र्थ ली ॥ ॐ यः
 ल ॥ ॥ सी मा ऊ न द स
 न ॥ ॐ अ नि सि ता सि ॥ अ
 हि ना यू न ली ॥ ॐ अ या हि
 दा ॥ ॥ व क्रा यू ज न ॥
 ॐ व क्रा यू ज न ॥ य धी त य
 ज न ॥ ॐ य धी ता य ॥ ॐ
 ली लि य दा वि ॥ व न न सि
 न न य क्रा य वी त य यः
 ॥ त न यू जा ॥ य धी त स इ
 इ रु ति तं क्रा दा वि रि त
 द कि ॥ व क्रा सु य न ॥ ॐ
 अ व क्रा न ॥ उ क न य धी त
 ला य न ॥ ॐ ली लि य दा ॥
 म ॥ स ॥ ॐ अग्ना म धि य

तय २॥ ॐ महा इन्द्रा ऊ
वा ससाय ऊ न्या दृष्टिमाव
ह ॥ स्नामवत्सस्यवा दृष्टि ॥
वक्रावली तय पूर्ववत्पूऊन
दूष्टीनयनि दूष्टी ॥ ॐ
कयानयिगया ॥ दूष्टी हा
सुगया कस कं वरुं या
कुरुय ॥ ० ॥ ० ॥

यथायथाविधि मन्त्रं लोक
 लभेत्तु न ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं
 ॥ मूलकलशं दययूक्तः
 नैजिदं किमु त्रिसु ॥ ॥
 ॐ आदुष्टं नव ॥ १० ॥ गुरु
 ॥ ॐ गता न मित्र ॥ १० ॥ ॐ
 सदा जाता ॥ ५ ॥ समुदा
 वलि ॥ गंगसु ॥ गंगयति
 क्रोमालि ॥ गंगयलिगः
 मालकायूजायाय ॥ स्वस्व
 वदनयूक्तं ॥ ॐ आदि
 यु ॥ तिथि ॥ नक्षत्र ॥ सं
 वत्सर ॥ ययुर्न सुया

दिनल. सिद्ध दय्य लादि
कय ऊन ॥ धूय दीयने
व आदि यतिष्ठा. जायः
काग। अगम-धादि ॥ ॐ
तिकल गार्जन ॥ ॥

ततानागमलुलपूजनं ॥
 यंत्रवात्रलरुलुयं पूजा ॥
 ॐ नमो गमलुलाय ॐ दमा
 सनं २ पूष्यं २ ॥ ॐ त्वना
 अग्ने ॥ ॐ सत्वना अ ॥
 ॐ अयाग्याग्ने ॥ ॐ यम
 सती ॥ ॐ उड्डम ॥ ॐ
 ततात्रजमलुलपूजाय
 थाक्रमल ॥ ॥ ॐ तत्वा
 यामीत्यादि ॥ ॐ गं गं ये २
 ॐ ऊमूनाये २ ॥ ॐ सत्र
 स्वये २ ॥ ॐ गलुये २ ॥
 ॐ सत्रयूये २ ॥ ॐ का व
 ये २ ॥ ॐ सकसा मनाये
 २ ॥ ॐ मानं जया वरं सा २
 ॥ अवाहनादि वन्दनादि

तता अथ यदा साधनं ॥ द
क्रियुष्यहा उनादि ॥ अमु
मनं ॥ हित् कर्ष ॥ उं व
अस्माय रुट् ॥ उं या ग या
॥ ग ॥ विष्वाग्नि आर्त्तस्य
॥ इ ॥ उं य विष्णु ॥ य वि
शुद्ध दर्शनं ॥ उं विष्णु न नाट
॥ य विष्णु यन्धनं अग्न्या
य निष्काय ॥ ईश्वर वा ऊ
लक्ष्मि विवालयताय

न॥ ॐ यत्पुष्टं ० वक्र॥ कू
 लनसंमार्जनं॥ ॐ अग्नि
 सितासि॥ उत्तमगौरवपू
 वली॥ ॐ आयाहिष्टुति॥
 यविष्यलीला॥ ॐ द
 वीनाया॥ गथाद्याजली॥ ॐ
 यष्मां ॐ ॐ ॥ नृतिगली
 य॥ ॐ सविष्टुष्टु॥ अग्नि
 सिवनं॥ ॐ सविष्टुष्टु
 स॥ आत्मात्पुष्टं ॥ ॐ ॐ
 आयाकर्म॥ ॥ गौरव
 आय॥ ॐ ॐ ॐ निधाय॥ ॥
 इग्नेष्टुली॥ चतुष्टुली
 सुष्टुली॥ ॐ दवस्यत्वा॥
 पतार्यली॥ ॐ यत्पुष्टं ०॥
 समार्जनं॥ ॐ अग्नि
 तासि॥ सुष्टुली॥ इग्ने
 य॥ ॐ महीनीययासि॥
 ततः॥ चतुर्विधानं॥ दद
 यनउद्वलतलुनीनि
 धाय॥ ॐ वां ददयाय
 ॥ अस्तु ॐ ददली॥ सीमा
 र्जनं॥ ॐ वः अस्माय

रुद्र॥ यका नली॥ ॐ वीं न
गाय वीषट्॥ ॐ वूं वरु ली
य ऊलाधिय तय २॥ तलु
ल वरु हा (लुनि धाय॥ ॥
ॐ वूं वरु ली य २॥ ॐ वूं
क मूं व वाय न का क न ली
य २॥ मूं ल ल वरु लु ल ऊ
ल क लु म (धनि धाय॥ ॥
ॐ ति वरु ऊ ल क लु अ धि
ली य नी॥ ॥ त त ४ व (म
न वरु आ ला उ नी॥ विः
धि धी पू जा धू न क॥ त त ४
मी र व धू वा ड ग्व रु लु स्वा
लु नि धाय॥ ॐ सु वि लु
व ४ य ली व॥ ॐ आ र्थ यु
व ल ली॥ ॐ उ अ व ल
॥ ॐ सी य ली व॥ क ली य (म
ली॥ ॐ त ऊा सि॥ ॥ ३ ग्व
आ व मूं॥ मी र व धू वा ड
व व ली स्वा न ४॥ य नि ली
न व दि त ३ ग्व रु लु ली म
लु न त॥ ॐ दि ले अ न्द

अ

न॥ ॐ वीं वी ली नि धा
य॥ य वि री य वू मी र व मी र
नि धाय॥ ॥ मी र व धू वा
द लिं त ३ ग्व उ ल न त मी
वा र्च न॥ ॐ वि धू व २॥ ॐ
ल मूं २॥ ॐ धू व सि॥ ३
य य म न वू मी मा दा य॥
अ र्था द मी क्रिया मा ल रु
३ ग्व न॥ ॥ ॐ वीं रु द
या य म रु धी य ० ०॥ ॐ
म रु अ स्था व धी नी॥ ॐ
वीं नि र वा य र्थ व ना य ० ०
॥ ॐ स्व स्ति र्थ ०॥ ॐ वूं नि
र वा य सी म नी न य ना य ०
०॥ ॐ मा हि रू मी य दा रू
॥ ॐ वूं मी नी र व क क
ल्य ना मूं य ० ०॥ ॐ वूं
वा रू ली मी रू सी रू न य रू ली
रु वा य ० ०॥ ॐ वूं क व वा
य २॥ आ ल मूं ३॥ ॐ वूं
न य ल या य ऊा त क मी
य ० ०॥ ॐ का य स्वा हा क
मे ० ०॥ त त मी नी॥ ॐ

नागेशधरं हरे त्रिलोच
 श्रुतिविग्रहं । शीर्षं कंध
 वरं ध्यात्वा नृलीमकनास
 नं ॥ नामकनली ॥ ॐ वृ
 वरुलीयनागनाजाय
 ०० ॥ ॐ यालाय ०० याना
 य ०० ॥ ॐ वीं नयययाय
 निष्कुमनाय ०० ॥ ॐ य
 लायलावा ॥ ॐ वेंक
 वयाय रूया शीनाय ००
 ॥ ॐ या ०० रुलनी ॥ ॐ वूं
 गिराय अनया शीनाय
 ०० ॥ ॐ अनय ॥ ॐ वीं
 गिरसूताकनलीय ०
 ० ॥ ॐ मूर्द्धनीदिवा ॥ ॐ
 व० अलाय रुट कलुसि
 दाय ०० ॥ ॐ रुदं कलु
 हि ॥ ॐ वीं दयाय व
 तवंधनाय ०० ॥ ॐ वरी
 रुत ॥ गयणीयदानं ॥
 ॐ वरुलीयविग्रहं सह
 सरुतिनधीमही । तनी
 नाग० यसादया ० ॥ ॐ

वृत्तनदीका ॥ ॐ व० अला
 य रुट समावर्तनाय ०
 ० ॥ ॐ आरुपुन ॥ ॐ
 वीं दयाय विवाहाय
 ०० ॥ ॐ दवानय त्रीनि
 रुमादवा मूलाय सुगु
 ली ०० शमयीतय ०० ॥
 ॐ व० अलाय रुट ॥ वा
 नृलीयनाय विसर्जनाः
 निमातायित विसर्ज
 नाय ०० ॥ ॐ मागं वयू
 र्णं दयाय वृत्ती ॥ ॐ ति
 दक्षिण्याविधिः ॥ ॥

ॐ समिधनिद्रवस्य ॥
 सता १० अलादक्षकाय ॥
 ॐ तदवाग्नि ॥ वाउगी ॥
 दूया ० ॥ ॐ वीं कावली
 ०० ॥ ॐ वीं तनिधाय
 ॥ ॐ वीं नडेययमन ॥
 ॐ मरु० यजायतय ००
 ॥ ॐ दमनवलाग ॥ ॐ
 ॐ वीं ॥ वीं वसुयलव ॥

(अथ ३) न्येन उयस्यर्धने ॥
 कनिष्ठां गुलं य क्रिया ॥ स्वा
 मंतये व सर्वं क र्थ ॥
 ॐ सम्मास्य वधूत ॥ ॥
 विस्वीर्य कृ (अन ॥ जल
 लिवाल मृदीर्य ॥ ॐ ॐ
 नस्य व ॥ वामरुसुवे
 दूय ७ उययमनन ॥ ॥
 तस्मिन् ऊर्न ॥ ॐ ॐ ला
 य २ ॥ ॐ वजाय २ ॥ ॐ सु
 नाधियतय २ ॥ ॐ गारात
 मिन्द ॥ आत्मानं वनू ली
 ध्वात्मा ॥ वक्रा यलीत व
 दलाकया लाईर्न ॥ पुन
 रुमिषूदवाईर्न ॥ यीग
 वृ (लुनमलुली लिख ७ ॥
 तस्मिन् ऊर्न ॥ विर्यवाय
 त्यादि ॥ यलीत सुयुष्यादि
 लिदया ७ ॥ ३ ॥ ॐ सर्वस्वा
 दवस्था २ ॥ जलनामक
 वली ॥ ॐ वृ वनू ली नागना
 जा न्येय ० ० ॥ ॥ कृषी

तिलजलनदकि (अथ ४)
 यित्तस्य ॥ उयस्यर्धने
 ॥ तत न्येन ॥ ॐ डि
 कामं ॥ ॐ सफगा अ (न्या
 ॐ सफसा ग आयजि क
 य ० ॥ ॐ अ (ने डि मि गु
 रु ॥ ॐ लवना अ न्ना ॥ ॐ स
 लवना अ (ने ॥ ॐ अया न्य
 (ने ॥ ॐ य ग ग र्ग वनू ली
 ७ ॥ ॥ वंद लाकया लः
 नाग वक्रा यलीत क
 लक्ष नाग सु लिल यव
 वानू ली ग लयति न्क ग
 इ न्म वि हि द्वा र्ता म दि स र्वा
 न् स्वस्वमनु ल इ ग्ध ३ ति
 कोत्रय ७ ॥ ॥ श्रीरवेन इ
 ग्ध ३ ति पू र्ण याय ॥ ॐ स
 फगा अ (ने ॥ ॐ ति इ ग्ध
 ३ ति पू र्ण ॥ ० ॥ ० ॥

तत ४ तिला इति कानय ७ ॥
 नग ल बी हिया य य त र्थः
 ली ॥ ॐ वृ न जा य २ ॥ ॐ

५ वसुधा ॥ ॐ पु लु ०
 ॥ ॐ अ नू सि ता सि स ॥ सु
 मा ऊ न ॥ य वा क त तिल
 मि स हा य व हा म् य वा
 मृ त आ ला उ र्ध्व ॥ वा म्
 हा य जा दि ॥ ॐ ॐ द ० द
 ॥ स ता ता य व का पु क
 ल स स्ना न ऊ य मा ला अ
 इ वा ल थ त वि दि या य
 स त या द मूल म नु ल य
 जा ॥ य उ मा न न मू ला या
 य द स र्ध च न न य क्ता
 य वी त यू ष्य श्रु लं का ना दि
 द त्वा ॥ ॥ वा क् ॥ ॐ स वा
 नं का न सं यु क्ता ॥ वी दि या
 न आ वा य ह स म म य
 र्थ ॥ य उ मा न स ज ल व
 ति ष्ठा ज ल य क्ता नि मि त्य
 र्थ तिला इ ति स क ल्य ॥
 त ता आ वा य न न्या स ॥
 वी दि या र्ण ज यि त्वा ॥ य
 व नु हा व थ दु म् ॥ त

अ र्ण म ह ० व न ४ ॥ तिल
 मा ध व नू य च उ क य मि
 श्रि त्ति न ॥ आ वा य न
 श्रु ति कृ त्वा ॥ महा वा
 द ति यू र्ध्व श्रु ति द द
 ॥ वा क्ता न स स्ति वा
 र्थ य ० ॥ व क्ता प्र धी
 त व द ला क याल क ल
 हा द थ स्व स्ना न कृ त्वा ग
 हा य ति इ न्ना ना ग म लु
 ल य च वा नू ल ॥ न ज म
 लु ल य थ स्ना न द व ता
 स्व स्व म र्ण श्रु ति कृ त्वा
 इ व सि दि त्त न सृ ण ॥ ॥
 त्वा य ॥ तिला इ ति यू लु ॥
 ॐ यू लु दि वि य ना य त ॥

त ता य थ क र्म का न य
 ॥ य क्ता म लु य क न ० ॥
 श्रान दि सि वा स्ना न म लु
 य ॥ म लु यालं का ल वि
 ता नं चाम ल कृ य यू ष्य

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

माला ॥ दवङ्गनसां नङ्ग
 सां दूयादिङ्गसां अग्रमं
 लङ्गला ॥ अष्टयत्रयपु
 मध्वद्व (दीना वती यत
 इति ~~रुद्राक्षरान्न~~ ~~रुद्राक्षरान्न~~
 अष्टकलङ्गिस्त्रया ॥ तन्म
 (ध्वद्वस्त्रलिकासर्न ॥
 रुद्रयी (० निक्षय ॥ दवा
 (यतामहा (० दय्यर्ली
 निक्षय ॥ सर्वदय्य (० ॥
 वाक्त्र (० न ॥ अष्टादि ॥
 यजमानस्य यथा उला
 (यययथनामस्य दवस्य
 यगिष्ठा निमित्तार्थकृत्
 धीसूयायार्थानिम ॥ ८ ॥
 अष्टय ॥ गुरुनमस्कारं
 न्यासं वरुणस्य षड् (गन
 ॥ अष्टयानुपूजा ॥ उदक
 वलिद्वयदशा ० यवाक्ष
 न ॥ अं नक्षत्रान्त्रा ॥ अं न
 मावन्तु भय ॥ अं दृतीय
 त ॥ अं विष्णवे नमः ॥ अं
 आनानि युहि ॥ ४ ॥ धूय

दीय जायस्त्रय ॥ निद्रो
 (० निद्रिकल्यति ॥ वलि
 विसर्जनी ॥ अष्टमं लं
 ॥ स्नानमलुप्यं डामयि
 लावहि विधि ० ॥ ॥ य
 वकल्युजा ॥ अष्टमस्य
 कर्ली ॥ अं कावसम्पदाय
 २ ॥ अं सम्पदाहर्मि नमः
 मां उदावदया ० सुनाम
 मृगत्वमानं ॥ यत्तस्य ना
 मगुर्ध्वयदहि जिह्वा द
 वानाममृगस्य नाहि ॥
 मृगिका ॥ अं अष्टकां
 ति ॥ अंतिपूर्व ॥ १ ॥ अ
 थअ (नं कल (० ॥ अं
 गलुवाय २ ॥ अं यय ४ य
 थिष्ठां यय ॥ कषाय ॥ अं
 विष्णवे लाटमसि ॥ २ ॥
 अथ दक्षि (० ॥ अं दधि
 सम्पदाय २ ॥ अं सम्पदा
 यत्वा वाताय ०० सुलिना
 यत्वा वाताय ०० अनाध
 या यत्वा वाताय ०० य

तिष्ठथाय स्वावाताय ००
 निमिदाय स्वावाताय ०
 ० अथ यथा स्वावाताय
 ०० ॥ यन्त्रवे ॥ ॐ ॐ
 दं विष्णु ॥ ॐ तिदन्ति ॥
 ॥ २ ॥ अथ नेमि ॥
 ॐ यत्तस्मदाय २ ॥ ॐ
 उवन्न ४ सयि त्रासुरि
 यन्ना हाता वन ६ ४ ॥ स
 हस्युया अकुत ४ ॥ ॥
 यद्वा दय ॥ ॐ यद्वा
 स्यत ॥ ॐ तिनेमि ॥
 ४ ॥ अथ यन्त्रिम ॥ ॐ सु
 मादस्मदाय २ ॥ ॐ स
 मूर्द अष्टासलिलस्य
 मक्षाना यन्ना नायनुन
 विष्णुना ॥ ॐ द्याया वकी
 वृषहा ललो ८ अयाय
 वीत्रिहमावदनु ॥ ॥ क
 स ॥ ॐ नम ४ ॥ रवाय
 व ॥ ॐ ति यन्त्रिम ॥ ५ ॥

वायव्य ॥ ॐ दहो दकसम
 दाय २ ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॥
 वचन ॥ ॐ वाचनं सू ५ ॥
 मीत्वादि ॥ ॐ तिवायव्य ॥
 ३ ॥ अथ उक्त २ ॥ ॐ ॐ
 समुदाय २ ॥ ॐ समुदत्वा
 नृमता अय्य ननृवत्ता
 ॐ ॥ धिवा अय्य ननृवत्ता
 ॥ ॐ तीथत्वा नसितसिवा
 ० समया मयल्लमहिवा
 वदन् ॥ ॥ यं वा मृता ॥ ॐ
 मृता वल्लमृता वत् ॥ ॐ
 दि ॥ ॐ ति उक्त २ ॥ ॥ अ
 थ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ सिन्धु सम
 दाय २ ॥ ॐ समुद गच्छ ०
 ० नृविर्ग गच्छ ० ० दव
 ० सविता गच्छ ० ० मित्र
 वर ॥ ॐ गच्छ ० ० हा गच्छ
 गच्छ ० ० रुद्रा ० सि गच्छ
 ० ० आवाय चिवा गच्छ ० ०
 यद्वा गच्छ ० ० साम गच्छ ०
 ० दिव्य नृगि ० ० मित्र
 वत्ता नृगि गच्छ ० ० मना

मधादिर्वगच्छ सुखं ॥ ति ॥
 पृथिवीरुसमं ॥ ०० ॥
 वीहि ॥ ॥ ॐ वीरुयं ॥
 ॐ ति ॥ ॥ ॐ ॥ ॥
 गी ॥ ॥ ॐ श्रीमिह विः
 उह विरि ॥ ॥ रुस ॥ गीयः
 गी ॥ ॥ गीत मो वधी ॥ ॐ या
 आयधी पूर्व जाता दवस्य
 सियर्गं यना । मन नूतुल
 मह ० गीत क्षमा निस फेव
 ॥ ॥ गी ॥ ॐ मोदक ॥ ॐ रु
 कानामिदं यति सुन ॐ
 दाव वायमाना वृष रु
 सुजाया ॥ अदि नय य
 सासनस्य गीता दवी राज
 तीविश्वगर्भुति ॥ ॥ गीया
 दि ॥ ॥ ॐ ति पूजा
 विधि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥

ततादवनिर्मदुर्मनः ॥
 यउमानन ॥ ॐ नका रु
 नवल ॥ वलि ॥ ॐ अक्ष

वाचन ॥ ॥ वलि ॥ अग्नि
 ला रुवकासु ली पृवाः
 लिमिश्रदिन त्याय ॥ ॥
 वाचनं ॥ ॥ रुगन साक्षय
 ॥ ॐ का ॥ ॐ का ॥ ॐ यः
 गीरुकि ॥ ॥ काल ॥ ॥
 ॐ दीर्घा यत्ना ॥ ॥ हृष्टिः
 कर्म ॥ ॥ पूर्वदि कल ॥
 दिमृलिकादिवास्त्रानः
 काचय ॥ ॥ यउमानन
 वाचन रुस दायय ॥ ॥ वा
 चन ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ नस्त्रानं काच
 य ॥ ॥ अथादि ॥ यउः
 मानस्य यथा उला गीय अम्
 ददव यतिषु अस्मिन् य
 रुकर्म लिस्त्रानमहं कनि
 य ॥ ॐ ति स कल ॥ ॐ स
 म् उदाहर्मि मधूमा ॐ उदा
 यत्नादि ॥ ॥ मृत्तिका ॥
 ॐ अक्ष कान् ॥ ॥ ॥ अग्नि
 य ॥ यय ॥ पृथिवी ॥ ॥ क
 वाय ॥ ॐ विष्णु ली ली ॥
 ॥ दकि ॥ ॥ ॐ समुद्र
 लान् मनो अस्मत्तन्

चक्रा ॐ धिदि वा अ (न) उ
 वन् । नृती यत्नान् सितस्मि
 वा ० समया मयस्म महि
 यावद्वन ॥ ॥ यन्त्रव ॥ ॐ
 ॐ द विष्णु ॥ ३ ॥ नेर्ष हा ॥
 ॐ उ वन्नः सूर्यि जाम्ति
 यन्ना हा ता वज्र ॥ ४ ॥ सह
 सुयूगा अ उ त ॥ ५ ॥ यद्वा द
 य ॥ ॥ ॐ उ व द्वा ए स्य त ॥ ६ ॥
 ॥ यन्त्रि म ॥ ॐ समुदं अ
 द्वा सलिलस्य मधनाय
 नाना यत्न न विष्णु ना ।
 ॐ न्द्रा या व द्वा व द्वा रः
 ललाट आ या द वी प्रि ह
 मावदन्तु ॥ ॥ क स ॥ ॐ न
 मः समुदाय च ॥ ७ ॥ वा
 यश्च ॥ ॐ द व स्य त्या ॥ ८ ॥
 यं व ग य ॥ ॐ स व या मि
 समा य अ य हा दि ॥ ९ ॥
 उक्तं ॥ ॐ समुदं त्या नृ
 मना अ य न नृ च द्वा
 ॐ धिदि वा अ (न) उ व न
 । नृती यत्नान् सितस्मि

वा ० समया मयस्म महि
 यावद्वन ॥ ॥ यं वा मृ ता
 ॐ मृ ता व द्वा मृ ता व द्वा ॥
 ॥ ॐ मृ ता व द्वा मृ ता व द्वा ॥
 मृ ता व द्वा मृ ता व द्वा ॥ ॥ बी दि ॥
 ॐ बी ह य य म ॥ ६ ॥ ॥
 ती (ध) द क ॥ ॐ यं व न य
 ॥ ॥ द्वा (म) द क ॥ ॐ द व
 स्य त्या ॥ ॥ ज लो द क ॥ ॐ
 हि ज लो न र्ह ॥ ॥ सर्व मू
 ल न ॥ ॥ समुदां द क ॥
 ॐ समुदं उ द्वा ति ॥ ॥
 व द्वा ली र्व ॥ ॐ अ यि नाः
 र्व द्वा उ न ति ॥ ॥ ॐ धि
 याली र्व ॥ ॐ आ या अ स्मा
 न् ॥ ॥ दं यी ली र्व ॥ ॐ स
 स्मि न ॐ न्द्रा ॥ ॥ द्वा या
 याली र्व ॥ ॐ ह म न न मृ
 तु ना द वा स्मि ल व म नृ त
 मु ता । व ज्र ए स द्वा जी ॥ स
 हा रु वि त्रि न्द्र व या द धृ ॥
 र्वा हा याली र्व ॥ ॐ न दी
 स ॥ यो स्मि न्द्र ॥ ॥ रु लो
 द क ॥ ॐ या ॥ रु लि नी ॥

गं (म) दक ॥ ॐ ॐ म म गं
 जय म न स त ति ॥ ॥ रु
 स्म ॥ ॥ व न ल य म य
 जी ॥ ॐ व न ल य वि म ह
 सह सु रु ति न धा म दि ।
 त न नाना ग ४ य यो द या ७ ॥
 ॐ ॐ म म व न ल य धी रु व
 ॥ ॥ गं ग मृ ति का ॥ ॐ
 मा हि रु म्मा दि त ति ॥ ॥
 वि नू लु ॥ ॐ आ मि नु ॥
 श त मा व धी ॥ ॐ या अ व
 धा यू र्व जा ता द व स ति
 यू र्ग मृ ता । म न नू नू ना
 म ह ० गं गं धा मा नि स क
 र ॥ ॥ (म) ॥ (म) द क ॥
 ॐ स्म का ना मि नु ति ॥
 श त धा त ॥ ॐ अ म र्ग या
 ता ॥ ॥ द व स मू ल मः
 नू ल । गं गं या । सह र्म वा
 द र्ग वा गं ग्वा न । श र्वा न
 य उ मा न न उ ल दा य
 य ७ वा द्र (ल) न द वा थ
 द र्थ (ल) स्ना य थ ७ ॥ ॥

धा न्य य न्न य न ॥ ॐ धा न्य म
 सि ॥ ॥ वी हि य न्न य न ॥
 ॐ वी ह य न्न म ॥ ॥ रु ला
 हि ष कं ॥ ॐ या ४ रु लि नी
 ला जा हि ष कं ॥ ॐ स सि न
 ॐ ॐ ॥ अ र्थ या या द क न
 सि र्वा न ॥ ॐ आ धा हि ष
 म या ॥ ॥ (म) द क ल य
 उ मा न सि र ॥ ॥ ॐ ति
 स्ना न दे व स ॥ ० ॥ ० ॥

त ता द वि वि य क ॥ अ य का
 न य उ न ॥ य उ मा न न य
 उ न ॥ ॐ वि न्न क म्म (ल) ॐ
 द मा स न २ ॥ ला हा त स ॥
 न र्व ह सा र्थ च न्द ना दि धू
 य दी य ॥ स्ना न ॥ ॐ वि न्नः
 क म्म न म स र्थ य लो कः
 स वि का न क ४ । य थ य ध
 क ना र्थ च वि न्न क म्म न म
 सु त ॥ अ ग न धा दि ॥ द क्षि
 ण वि य अ उ ल म ला का र
 वि य ॥ हि ति न सौ द व

इत्तमो दृष्टि विरयके ॥ ॥ ॐ
 यः अन्निवधमन्त्रं च न नि
 यवित ॥ लाचनं लाचनादि
 वि ॥ ० ॥ कायलन पायद
 व ॥ ॥ यथा दवस्य मूल
 मन्त्रं ए उ उ ययं लिखित्वा
 द्वादशी उक्तं यय ॥ ॥
 यूजनं ॥ चन्दनसिद्धय
 क्षयवीत सगुण माला
 पुष्प रुल धूप दीप अर्च
 कामादी न दद ॥ ॥ मन्त्रः
 आवतियतिष्ठा ॥ दवाः
 जीर्णद ॥ ॐ ॐ मन्त्रवन्
 ल ॥ ॥ दवास्तु न ॥ ॐ उ
 मिष्ठ वस्त्रं स्यात् दवय
 त्वं मन्त्र ॥ उ य यय नु
 मन्त्र ॥ सूतान ॐ उ या
 रुवा सया ॥ ॥ दवाः ॥ अ
 वायुं अर्चवाया ददना
 सुकृत् ॥ ॥ मन्त्रा वायुं व
 लिदद ॥ मालसा ॥ ॥ य
 उमानादिलिनी ऊं युक्त
 न ॥ य उमानन ऊं न क

दव इत्तमो न इत्तमो न्यः
 मन्त्रं यय न ॥ वाक्त्र (लेन
 कलक्षाली कृत्वा ॥ वाक्त्र (ले
 न ॥ ॐ स्वस्तिनामिमी गं गि
 य ॥ ० ॥ मन्त्रं मन्त्रादि
 वायुं कृत्वा ॥ याणी कात्रय
 नमर्चवा सुकृत्वा वा यः
 मन्त्रं यय वा वा म य ॥
 यय ॥ ॥ अथ नेमिस्तु द्वाः
 न निर्मन्त्रनादि अग्निना
 दवक्त्रादिर्क विधिना कृत्वा
 वाक्त्र (लेन ॥ यन ॥ वाक्त्र
 (लेन अविन कलक्षानया
 दक्षिणयनिकुमले य मन्त्र
 मन्त्रं यय पूर्वोक्तं रुदयी
 ॥ ० दव वा सुवर्ण कलशं
 वा निधाय ॥ ॥ ततः ॥
 या कलशं यूजनं ॥ वाक्त्र
 (लेन न्यासादि कृत्वा ॥ ॐ
 नमः ॥ मन्त्रा यय ॥ अमु
 ल यूजनं ॥ वस्त्रं यय कृत्वा
 ॥ दव मन्त्रा कलसा लिख्य
 के ॥ ॥ दव वस्त्रं कलसा (थ
 दारुवनायाय ॥ ॥ ॐ

ॐ वः ॥ अस्मय रुद्र ॥ ॐ यो
निर्दल्ये नो य ० ० ॥ ॐ नः
तस्य यो निवसि नः ॥

[illegible]

五

ASHA ARCHIVES

STANLEY BRADY

902

ASHA ARCHIVES

१ गार्कवडासनी दधी- छिनेमसुकसंयुता । गदागंमवधेगायाम- दक्षव कुंवरप्रदनी ।
काटिहृयसुमंतडी- गयकीवनसन्निनी । नानाप्रतापिसंयुक्ता नानाकृतधरुषिता ॥
बुझ- एदिगलधोश- हेनवः सहसंयुता । कलायकसुयी ० व- तापुव नृप- अदि
तांशि लोबुवापिणी दधी- शिनेका मकनू पिणी । सर्वसिद्धिगलधोशी सर्वदवी
नेमसुता ॥ सर्वो नन्दमयी दधी- सर्वलक्ष्मी संयुता । जाऊ गऊं ज्यनी दधी
सन्निधी सर्वसिद्धिनी ॥ रीगुयाधमन ॥

उपदिष्टं नमो मालका प्रायथन

श्रीमन्मन्त्रानाम्
 को सः जिह्मं किं (म) वलि
 कुरुन विष्णु
 श्रीलक्ष्मी यन्त्र
 दीप्ता विष्णु यन्त्रका
 ००००००००००००००

श्रीमन्मन्त्रानाम्
 - देवदत्तसंस्तानयायकथन -
 दत्त



श्रीमन्मन्त्रानाम्



ॐ

- कृष्णायार्थं मालसाविय
 - आचार्यनवियर्क इ
 धावलि



वज्रमल्लवर्धनं नमो नमः



विष्णु
 श्रीमन्मन्त्रानाम्

- वज्रमल्लवर्धन



श्रीमन्मन्त्रानाम्

उत्पलक
 यथात
 वज्रमल्लवर्धन
 यजमान

महसूक्तं कामरुष्यं व
 धिभयं विवारुसं ० सुमी
 धानां अस्मिन् ०० ॥ ॥
 अर्धवासमयलादि मूं
 ऊरुषुं किन जानाविय
 ॥ मयगी धन १० ऊयनय
 कावायक ॥ ॐ यज्ञायवी
 रं यनमं यविर्ग ॥ ॥ व
 र्णमयगी ॥ ॐ नमः
 मयगी पुनानाय ०० ॥
 ॐ वरुणाय विद्महे सह
 सहसि न धीमही । तन्नो
 नानां ४ यवा दया ॥ ॐ
 वत नदीनामा प्राति ॥ ॐ
 वः अस्माय रुद्र समावरु
 नाय ०० ॥ ॐ आरुधून
 न ॥ ॐ वां ददया य विवा
 हाय ०० ॥ ॐ दवा नां य
 ती प्रिमा दवा मुखी य
 त्वष्टु य सुगुह ० सामयी
 तय ०० ॥ ॥ कन्यादानं
 दद ७ य ऊमानेन ॥ ति
 लकून ऊलं ४ त्वाय ०

ॐ ॐ अर्धवासमयलाह के
 ल्यति ॥ ॐ अर्धादि ॥
 जीवतु लना गना जाय
 दं वी क न्यादानं
 रुसमहं संयुद ॥ ॐ
 कादा लुसादा ॥ ॥ व
 रुदि पुदानं ॥ ॐ वसाह
 यविष्मसि ॥ ॥ मीतवृ
 न्दका यात रुलिनी सला
 दसगया दलाय ॥ स्वलि
 वानं ॥ ॥ रुलिनी कया
 ॐ गातामिन्दु ॥ ॐ हिन्
 ल्मगरु ४ समाव ॥ ॥ मीत
 रुन्दकान कावायक ॥
 ॐ सहसालि सहस ॥ ॥
 वाका सुवह राय ४ ता
 सासी धी नारु गव ४ यवा
 चीना मुखदुति ॥ ॥ मा
 सय ७ ॥ ॐ आना हर्मि
 मस्मावत् ० रुि आरुव ।
 अरुि गिष्टु र्ग न्यसाव
 वाधस्युत नागय ॥ ॥
 अलिनिनदाय ॥ ॐ नमः
 ४ मीरुवायव ॥ ॥ सना

ॐ ति २

ततामूलावाश्लक्ष्मीयः
 (गुणलक्षणत्वापित्तत्वान्या
 सौख्यं यथा ॥ ॐ वांस
 ४ एघिवीमूलधियतरथर
 ॥ ॐ एघिवीमूलधियतर
 थरिदतत्वाय २ ॥ ॥
 मासि ॥ ॐ शिवाना
 मासि ॥ शिवसि ॥ १ ॥ :

हं त उ त त्वा य २ ॥ हृदि ॥
 सं वा य त्वा य २ ॥ मूख ॥
 वं आ का श त्वा य २ ॥ नि
 त्ति ॥ हं उ य स्तु त्वा य २
 ॥ लि ॥ हं वा य त्वा य २
 ॥ पाद ॥ वं पा द त्वा य २
 पाद य ॥ हं पा ति त्वा य
 २ ॥ पा ॥ वं वा क्त्वा यः
 २ ॥ सर्वा ॥ तं ॥ त्वा
 य २ ॥ क ॥ ४ ॥ लं मन त
 त्वा य ॥ हृदि ॥ हं वृ द्धि त्वा
 य ॥ हृद य ॥ उं अ हं का न
 त्वा य ॥ सर्व ग ॥ ० यु क्ति
 ति त्वा य ॥ सर्व ॥ हं
 निय गि त्वा य ॥ सर्व ग
 ॥ ० काल त्वा य ॥ स
 र्व ॥ मं कला त्वा य ॥
 सर्व ॥ उं न ग त्वा य
 ॥ हृदि ॥ हं वि श्रा त्वा य ॥
 हृदि ॥ वं कला त्वा य ॥ हृ
 हं मा या त्वा य ॥ हृदि ॥
 मं ॥ न्य त्वा य ॥ हृदि
 वं स दा नि त्वा य ॥

श्रीवायी ॥ कं मक्तिगलाय
॥ गिरसि ॥ अं गिरतल्वः
आपिकोये स्वाहा ॥ ॥
ॐ तिर्वचविं मतिगल्वः
२५ ॥ ॥ ॥ ॥

ततः अरुणि मतिगला
तल्वनर्म ॥ ३६ ॥

अथ सट् पि मतिगल्वः
दिना ॥ ३७ ॥

अथ वरुणस्य षडं न्यास
न ॥ ३८ ॥

ॐ वः अरुणाय रुट् ॥ क
लतल्व ॥ ॐ वः ददया
यनमः ॥ ददय ॥ ॐ
वां गिरसि ०० ॥ गिरसि
॥ ॐ वूं गिराये वषट् ॥
गिरायी ॥ ॐ वें कववा
यदूं ॥ कवव ॥ ॐ वें न
णाय वें वट् ॥ नणदया
॥ ॐ वः अरुणाय रुट् ॥
अरुणाय ॥ ॐ ति कर्न न्या
स नां ग न्यासः ॥ ॥

ततो जीर्व न्यासं कावय ॥
॥ यथा देवस्य मूलमनुल
मं तं वा सहस्रं वा कावय ॥
॥ कृष्णं न गिरसि स्थ
स्वाकार्यं कावय ॥ ॥
ॐ ति जीर्व न्यासः ॥ विधिः

अथ यावत्पतिष्ठा धनविय
नित्ययूजाया तसा उ विय
नित्ययूजामया तसा या
वत्पतिष्ठा विय ममाल
जीर्व न्यास इदं म क
३९ ॥

आरुति मर्तं वा सहस्रं वा
कावय न्यासं कावय ॥
ॐ वः ॥ ॐ यत्रा कृत्रस्य
विरुधा विलस्य नृदादा
ययुधिर्वी जीवदानुम
॥ यामेव यंच नमसिस्तः
धारिस्मा मदीनासा अन्रः
दि ॥ यउ न या कली
नासादयद्विषगा व ॥
सि ०० ॥ ॥ ॐ ति य ॥
यतिस्तु नं सि रं न्यासः

॥ मूलन न्यस्त ॥ ॥ जीव
 लिहान ॥ या ली द हित
 था जीव आशु द हित सूर्य
 धन । विद्या ज्ञान सूर्य द
 हि द हित मलय सायत
 ॥ ॐ ति जीव न्या सुविधि
 ४ समा क ४ ॥ ॥ ॥

तता वि श्व कर्मा यूजन
 कन मिमाल काय जायाव
 क यजमान न कन मि
 ता स्वस्तिक सख दा उ
 ॥ ॐ अन आरु उतया
 आरु त्रियं याम तादिना
 स्नान ॥ कन मिया लारा
 तसखस्तिक यत नचा
 याद (थ यू जाया यरु
 जा ॥ बाअ ॥ ॐ विश्व क
 र्मा ॥ ॐ द मा सन २ ॥
 यूय २ ॥ ॐ य या दार्घ्य द
 र्घ्य च न न सिद्ध न यू
 य धूय दीय ॥ ० ॥ ध्यान
 ॥ दि उ उ ४ यान द रु सु
 उ दा धात्री क र्मा सन ४

विश्व कर्मा गदा (नो यो ह
 न मूडा म् सु र धृ क ॥ ॥
 व द ॥ आइ ति ॥ ॐ विश्व
 कर्मा विम ना आदि हा
 या धाता विधाता य न मास
 द क । त मी विनि स मिवा
 म द नि य शा स क मृषी
 न य न न क माइ ४ ॥ ॥ यु
 व न क न मिता लाय ॥ ॥
 जाय ॥ स्मारा ॥ ॐ विश्व क
 र्मान म सु र्म ले ला क सु
 दिका न क ४ । यथा य ध क
 या र्था च विश्व कर्मान न
 मा सुत ॥ अरु ग धादि ॥ द
 कि ल स रु आरु त्रि न वि
 य ॥ ॥ आइ ति विय ॥ व द
 ॐ विश्व कर्मा विम न ति ॥
 स्मि न या ॥ १२ ॥ व द ॥ ॐ स्व
 स्ति रु व वी र्ध न आ लु र्ध व
 वा य र्ध न । य ध र्ध व स र्ध द
 द स्त म (न ४ यू जी व वा द
 ४ ॥ यू लु ॥ ॥ च न रु
 न द व द ता सा थ न रु आ

दयावाय कवमि य ऊ
 मान ॐ ति सि थ ति र्यो
 य वा द्र ले न र्ग र व धू वा
 न य ऊ मान न ला हा त
 न क व मि न आ रं ति व
 न ॐ ति सि न ला हा त न
 दू ग न र्ग व स्ति न हा त ॥
 वा द्र ॥ ॐ अ य वा लो रु क
 ल्य ति ॥ अ य दि ॥ य ऊ
 मान स्य वं न द व मूर्ति
 स्य न स्य मूर्ति म सु ॥ ॐ
 य ति स्ति ता सि द व र्ग स्य
 ति स्ति रु व त्व । सा नि ध्य य
 ति य य न य ऊ मा ना सु व
 र्ग य ॥ ग नो सु द्वि य द नि
 र्ग ग नो सु द्वि य द व च रु
 स्य द । ग नो सु स र्व ला का
 नां ग नो वा रु रु (धे व च ।
 य ऊ मान स्य रु ला र्य य
 धु य र्ग स वा न्ध वा ॥ १ ॥ न रु
 नु स र्व दे वा नां द ग र्ग
 य न मा सु त ॥ या व रु त
 य त स्य य ध ऊ य व न व
 ति नी । ता व द व स रु सु

ति व र्ग ला क म हा य त
 ॥ वा द्र ग न्ति र्ग यी ना डा
 स्य नि न ॥ स्य ऊ मा स्य ॥
 ग र्ग यि या व ध र्ग य स
 ति ता ना ग्य म व च ॥ द म
 ल रु य द न न र्ग य र्ग
 ति रु र्ग रु व ॥ या व रु त
 स्य स्य स्य म दि नी स्य
 सा ग ना ॥ या व द वा का ग
 र्ग ग र ता व त्व रु ति ना
 रु व ॥ ॐ ति ना रु व रु वी
 र्ग ग र्ग रु व रु व रु व
 ना य र्ग रु व स्य द स्य म
 (मे य र्ग य वा रु न ॥ ॥
 य ऊ मान स्य व र्ग र्ग मूर्ति
 द व ॥ ति ना रु व रु व रु
 य ति ना रु व ॥ ॥ मूर्ति
 ना इ ति व र्ग ॥ ॥ ॥
 व द ॥ ॐ ति ना रु व रु वी
 (मे ति ॥ य र्ग ॥ स मि ध स
 रु र्ग र्ग य वा न ला य ॥ ॥
 म त रु ता ल या स र्ग रु व
 द य ॥ य ति ना रु व रु व
 अ य र्ग य र्ग

नाहिषकं ॥ चन्दनसिद्ध
समुल्लेखनतयकं । स्त्रियद
न्निष्ठागयकं ॥ अर्चनं
दि ॥ सहंश्रयगियगिष्ठा
लाजान ॥ ॥ ॐ गिअन्य
ददवयास्त्रियविधिः
थतिअन्यमूक्तिदवद
तसामदसाम्मा ॥ ल ॥

तितावत्रुलदवाञ्चनीवाङ्म
लेन ॥ ॥ ॐ वः अस्मा
यरुठ ॥ यदीययूकम
कुलकनीगन्यासं वृथा
॥ अर्चयाययूजाआः
मयूजान् ॥ ततः यूज
नं ॥ ॐ मलयतय ॥ ॐ
गुत्रुसा ॥ ॐ यानिनीसा
॥ ॐ कृपया लायनमः
ॐ आक्षवादि ॥ २ ॥ ॐ
मादि ॥ २ ॥ ॐ मकनास
नायनमः ॥ ध्यान ॥ ॐ
वत्रुलमहताजाया
लहसुमहाधियः ॥ दि
मदन्दवल्गुसामः

निवत्तविहविगः ॥ ध्यान
पूर्व ॥ ॐ वृं वत्रुलं
हागदु ॥ ॐ हगिष्ठ ॥
नमः ॥ ॐ वृं हां अनन्ता
यनमः ॥ पूर्व ॥ ॐ हां
वां वागुके ॥ अर्चने ॥
ॐ हं टककाय ॥ या
म्य ॥ ॐ हं कंककटक
य ॥ नेर्गल ॥ ॐ हां वं
यद्राय ॥ यज्जिम ॥ ॐ
हं महायद्राय ॥ वायु
य ॥ ॐ हं गं गयवाला
य ॥ उरुप ॥ ॐ हं कं
वृलिकाय ॥ ॐ गं
न ॥ चन्दनादिपूजा ॥
वलिसइइत ॥ ॥

ततः ययवालीपूजा ॥ ॐ
वृं नन्दाय ॥ अर्चने ॥
ॐ वृं ययाय ॥ वाथाः
ॐ वृं विपिकाय ॥ ॐ
गं न ॥ ॐ वृं वृं वृं वृं
२ ॥ म ॥ ॥ ततः

ॐ वृं रुद्राय ॥ नेर्गल ॥ ॐ

साकपालयुजा ॥ ॐ वृं लं
 ॐ लाय २ ॥ ॐ वृं नं अं न
 य २ ॥ ॐ मं यमाये २ ॥ ॐ
 ॐ नं नं लाय २ ॥ ॐ ०
 वरुणाय २ ॥ ॐ ० यं वाय
 व २ ॥ ॐ ० सैं वृं वाय २
 ॥ ॐ ० हं ॐ ननाय २ ॥
 ॐ वृं नं ननाय विष्णु व २
 ॥ ॐ वृं ॐ उ वृं य व म
 ल २ ॥ ॥ म ॥ ॐ
 वृं म लना ग कालाये २
 ॥ मूलमनु व गिया ॐ
 लि ३ ॥ ॐ वृं वरुणना
 गना ॐ नमः ॥
 ॐ वृं वरुणना ग कय २
 ॥ ॐ ॥ गि गिया ॐ लि
 रुला वन्दना कतयुजा
 यवा ॐ वलिसु ३ ३ ॥ म
 नु ४ ॥ ॥ ॐ वृं सर्वनाग
 गल नाग नाग नागि ना
 गल नाग कूमा नाय स ग
 लस्य गिया नाय ॐ मां य
 जी वन्दना कतादि तं
 ली नी नं वलि गृह २

०० ॥ कमस्व वलना मम ०
 ० ॥ ॐ सर्वम विद्या वलि
 गृह २ ०० ॥ ॐ सर्वसाद
 वसा नमः ४०० ॥ ॐ सर्व
 सायक सा गल सा २०
 ० ॥ ॐ सर्वसा रूत गल
 सा २ ॥ ॐ सर्वसा नाक स
 गल सा २ ॥ ॐ सर्वसा य
 वत सा २ ॥ ॐ सर्वस्य ४
 समूह सा २ ॥ ॐ सर्वसा
 दीय सा २ ॥ ॐ वृं सर्वरु
 मिया लना गल सा २ ॥ ॥
 गीरवसु ३ ३ तया वयवा
 ॐ वलिसु ३ ३ ॥ ॐ गि
 वलिविधि ४ ॥ ॥ वन्दना
 कत धूय दीय रुल नेव
 यतां वलादि ॥ जाय ॥
 धान ॥ २ ॥ १०८ ॥ यद्व
 वासनम लुल वायक
 दावा वायसा नत ॥ ॥

ॐ नमा वरुणाय ॥ नमाः
 ना गल नायति नूयाय
 ति उगल य । असादि

सिद्धिदाताय नमः वा
युवसस ॥ यस्मिन् युवसः
हो विजयते का नृपः
रावात्मना नो (गनाथः
नवात्मका निरुद्ध न धनी
यथा गम्यते ॥ सानन्दाल
यसोम्या (जीव यत्र मं स
सात्र ३१ खट्ति दं भाहा
वर्तुसु इह नानक उल्ल
निर्लेयनादात्मकं । ना
(गसो रुवने ज्वे प्रो उल
यतिना गत्त तस्मै नम
॥ गंगया सकलानि ती
र्थं रुवने तेनार्थकं सार्ज
गर्जया लालादि शिवा
तर्कवजनकं ना (गंग
रूपा विरु ॥ वाल्मीका
समस्त कलावकलं
संक्षुद्रता वा त्रिसा । सा
यं सर्वरूपा वयूय रुग
वान् ना गत्त क ४ या रु
व ॥ ना गत्त गत्त क
निर्ले उलना कामहा
वल ॥ निमिग्न (ये व

विष्णोता ना गत्त जायते न
म ॥ गंगं रुवने रुवने रुवने
रुटिका वदारी कान्
किर्तिं रुवने रुवने
(गं रुमानं । ना गत्त वली
रुग विरुष लत्रम्य मू
हि ना गत्त धिर्यं वन लना
उमहं नमामि ॥ वन्धु
कवर्तु विरु रुमने र
ना गत्त रुपिनी । रु नो यव
महाना गं नमामि वल
दायिनी ॥ वा लुकी सोम्या
रूपं य (ये त वल्लु रु (गं
रुने । रु लो यय वि विरु
लो नो मिना (गं रु रु पि
ली ॥ व ३४ रु लो किर्तिना
गं मलिव लु रु (गं रि
ती । तत्त काना मना गं
व नमामि ना गत्त रुपिनी
॥ अटसी युष्मसे का सी
धुरुल रु लो ललित ४
पिरु लो किर्ति द दं ग
रूपं क कटि कं नम

१॥ कयूत्रहाजरूषीगः
 वरूयग्रसवर्षुर्क। वरू
 रुक्षीकिर्तदहं यग्रना
 गनमाम्यहं॥ यूलुलीक
 निकार्जसर्वलीकाजर्ल
 कर्त। वरू॥ रुक्षीकिर्तः
 कार्यः महायग्रं नमाः
 म्यहं॥ श्रीरवपालमहा
 नागं स्यामवर्षु वरू॥
 रुक्षीनमामि श्रियं नू
 र्यं महावल्लयनाक
 र्म॥ कूलिका नाम नागं
 वरू वरू वरू विविर्ग
 । रुक्षीयक्रमहा कार्य
 सद्यं नूयं नमाम्यहं॥
 ॥॥॥ गिस्तार्ग कृत्या॥
 क्रमा मुति॥ दवार्थः
 यतिद्विर्गजलयतः (मा
 वाक्षयादिष्टं जाशान
 जलाकनार्थरुवतः। यति
 द्विर्गयुगतां। नस्यने इ
 विगाद्यदायसकलीत्वा

नादिकर्मोक्तं तस्मैनाग
 नभाः सुकाजलेमयीयू
 तात्मनीलाहमे॥ वरूत
 र्थीरूयायालानवनानी
 नयूसका॥ रुक्षीतां नाग
 वरूदिनवाशीष्टयीय
 त॥ ल्वंगतिसर्वरूतानी
 र्गिर्तल्वं वनावयं। अ
 न्धं वरू लरूतानी दृष्ट
 ल्वं यजमं वरू॥ कर्मल
 मनसावाचा तल्वं न्याना
 गतिर्मम। मरूहीर्न कि
 याहीर्न रुकिहीर्न गये
 वरू उयहामार्जनीहीर्न
 कर्तं निलीमया तव अ
 कर्तं वाक्कहीर्न वरू म्यतां
 सर्वदवता॥ अग्रजी-
 दि॥ ॥ ॥ ॥

ततावाक्कलेनदवाइने
 कर्मलद्विर्गकावय॥
 ॐ॥ मंभवर्षुली॥ ॐ॥
 तवदे॥ ॐ॥ नमस्तु
 र्थस्या॥ समिधसरुर्ग

स्वधुवानदवदायइजा॥
 धतिधूनदावकिक्का
 यनसंखाइतिविय॥
 धतिधूनदावयंयसु
 गुकानयिदावदवय
 तिष्ठायाय॥ठायाहाना
 वइजा॥ॐॐमंमवत्र
 ल॥ॐमनाइति॥ ॥
 ॐति॥ॐदवयतिष्ठा
 विधि॥संमाय॥ ॥
 नाम॥

तत्तविश्वकर्मयूजा॥ॐ॥
 विश्वकर्म॥ॐॐदमास
 न॥॥यूय॥॥॥नगदा
 अनदसार्थयन्दनसि
 इव॥यक्षायवीगधूयदी
 यदकि॥सह॥कारुंति
 द्वाय॥॥॥ॐविश्व
 कर्मनमसुखं॥॥लाक्का
 सुखिकात्रक॥॥॥कर्म
 इन्द्रसार्थविश्वकर्म
 नमाम्यहं॥॥अणगन्धदि
 ॥ॐतिविश्वकर्मयूजा

स्त्रिययाश्रुतिविय॥
 वद॥ॐॐवत्र॥॥॥
 हिमिआदिन॥स्त्रिल
 महावल॥यंयवात्र॥
 रुलियाम॥ॐलसुखा
 दविसर्जमयादाव
 हिमिइसा॥ॐथिइज
 सा॥ॐयिइजसा॥यूयू॥
 तिइजसा॥यं॥नसं
 द॥ॐसं॥थाय॥॥ॐ॥
 निइजा॥दगसा॥मदग
 साम्मालइजा॥॥॥

धनंलिस्त्रियदाज॥॥
 वाक्कनन॥॥॥स्वधुवान
 यउमाननलाहातय
 कमिनका॥रुलिन॥॥
 सिनलाहातिन॥धति
 स्य॥थिस्य॥तय॥॥वाक्क॥
 ॐॐअवालाक॥त्यति॥॥
 ॐॐआदि॥ॐॐ॥
 वउलं॥॥॥यावइन्द्रा
 कर्मदिनी॥वहतवात्रि
 मुदा॥॥॥गीतलं॥॥॥

मनाहर्न। यावर्द्धनस्य
सूर्यं न्यमदिनीसयः
सागना ७ ॥ तावन्ति सुः
स्त्रिभारुवा ॥ ॐ स्त्रिभारु
वउवि ॥ ॐ गंआमुर्कः
वावर्द्धनं वन। यथैरु
वसुखदस्त्रमं ॥ ॐ गं
नीयवाहनः ॥ ॐ गिवा
रुवमानुषीत्यः ॥ स्त्रिमं
जिनमायायजात्यावाः
यथिवीश्रुति ॥ ॐ विमो
मानुषिकमामादि ॥ सी
यजमानस्यय ॥ ॐ विमो
दिउलस्त्रिभारुवा ॥ ॐ
गंआदि ॥
वर्द्धनयामूलनाइनि ॥
१२ ॥ यथै ॥ ॐ स्त्रिभारु
वउवि ॥ ॐ गं ॥ ॐ गं
नत्यायदिनि ॥ ॐ स्त्रिभारु
दिउलस्त्रिभारुवा ॥ ॥
मगहतालयादिनस
रुआनतिपुतिस्त्रिभारु
धूनकं इमायुर्वव ॥
ॐ तिपनांकास्त्रिभारु

नविधिः समाय ॥ ॥

ततादवाइर्नयायथनः
मालहितिर्वा इमा ॥

ततायजमाननवद्वाः
ॐ लिहत्वा रुचं काव
य ॥ ॐ वव ॥ ॐ नमा
ना ॥ ॐ नयायति ॥ ॐ ग
रुयश्रुतिदि सिद्धिदाता
य नमस्त्रिभारुवायुर्वव
सूर्यमहं गं ॥ ॐ गं
यासकलानिर्गर्थ ॥ नागः
या ॥ ॐ लका निर्गर्थ ॥ ॐ गं
इव ॥ ॐ मुद ॥ ॐ वार्ध
वपतिविर्गर्थ ॥ ॐ गं
लीयावाला ॥ ॐ ॥ ॐ यसी
दउलनाथस्त्रिमया
ननकारिर्गर्थ ॥ ॐ नसर्व
विननर्कम्यतां वउल
यव ॥ ॐ गं गितिसर्वरुता
नी ॥ ॐ यायार्हयायकर्म ॥
४ ॥ ॐ यजमानस्ययथः
उलाइयउलका गं
युजा निमित्तार्थ ॐ गं

मं धादि ॥ साष्टी गयलः
मं यलम्य ॥ रुमो ॥ मलु
लविसुर्जन ॥ यथनः
सिरसिरु मली ॥ ॐ तिः
यलमि का यतिष्ठा विः
मिः समाक ॥ ॥

दवदतसा यतिष्ठा यति
कन स्ति न हा न मालः
दवनि दू या माल योत्त
थियाव थनी लिदिति
माल दवमदतसा हिः
ति इका यां गक इना ॥

ततादवा ननक मलम
ति इंदया ॥ ॐ ॐ मं म
वरुला ॥ ॐ वरुलस्यो लं ॥
ॐ नमामुसर्थस्य ॥ ॐ
जातवदल ॥ ॥ गं रव
गुवानस मिधन दवश्र
दियं दाय ॥ थनी लि डि
क जाय नमं रया इति वि
य थति धूनदा दवइ
नसा हिमिश्रादियं यं
यसु गकान यिदा व य
तिष्ठा याय दाय हा ना

व ॥ ॐ ॐ मं म ॥ ॐ मनाः
इति ॥ ॥ ॐ ति यलमि
कादि पूजा विधि ॥ ॥

तताय उमान नन उलसं
कल्यं दूया ॥ ॐ गंतिल
गुहोत्ता ॥ ॥ अथवाला
रु कल्यं ॥ ॐ अथादि ॥ ॥
वाक् ॥ अथो गममा रु वि
याली रुमी जा ग्न नयाय
वा रु फि रुता दया सर्वम
मदार्क उलं लिदी ॥ ॐ वलु
न उता मालि रु ल्मयं (ज
लदा गुरु ॥ ॐ गी रु ॐ वा
विधवा यां दव (ग वाक्
लमयव ॥ वायी दूय तज
मदि उल धेनू यलमि
की ॥ यथ वि (ध दयान
नुदया दवा दि सर्वक ॥
ग वाक् लमि दि सर्वस्मि
न धम स्या नान विद्यः
त ॥ यथा यथा वया नीयं
पिव नि याति नारु गी
तथा तथा कुर्य स्व गी

धम्मो वृद्धति वृद्धति ॥
अरु गंधादि ॥ उलदकि
भतयक ॥ ॐ ति उलस
कल्य ॥ हितिया ॥ ॥

उलधेन्या वाक् ॥ ॥
ॐ ममारि लक्षिर्ग कि
वित्त्वल्य भाला उलाध
ना ॥ वृवस्य मलुला कली
वानिष्टि हृदमृ गायमी
निवर्ग किस्व न्या ल्यं ल
मन्दावित मूर्ध्म ॥ ॐ
रु उ न म की कि रु लं य
न ग व निर्व क उ ॥ उ
लधेनू तथा शोवे न स
य य य ग दि व ॥ डि त
डिया य भ ना य वे म
वा य नि वा य व ॥ धेनू
दत्ता उल मया विष्
साला क म भू रं ॥ ॥

उधिया वाक् ॥ यानीय
य न लाक् पू या व न य न
मी म ह ॥ यानीय स य
दान न न पि रु वे रु

सास्वता ॥ ॐ ति रु ॥ १० या

यूष्त्रिया वाक् ॥ यूष्त्रि
ल्युय ४ क रु मा द रं
विदि म क व ॥ वृले ध्य
सय रु श्रु का या व ली
हि न ते ध्य ति ॥ ॥ ॥
ध्य ति वि (ग व २ र्म क ल्य
वाक् य ति द्या त ति न या
य रु ना ॥ ॥ ॥

तता वाक् (धेन य रु माल
रु य ॥ ॥ य ध र्म र वा इ
ति ॥ ना जा द ग य उ मा
ना वा र्थ द्वा य ॥ त ता द
र्ष या दि द ग व लि द व
द वी ध न लं म ग ल य ति
नि व विष् क र्म क ग
रु द व स ४ आ इ ति द
द ॥ ॥ ॥ धी नि क ॥
१०८ ॥ ॐ शो ४ धी नि र्
यु श्रि क ॥ १०८ ॥ ॐ यु
व क उ उ म ह ॥ ॥
त ता य व ध न्या दि ॥ ॥

तत्तवलियदानं ॥ ॐ गं
नीत्वादि ॥ दशवलिसय
साकविय ॥ ॥ ॐ न्नादि
दशलाकया लसर्वदव
तानेवयादिदर्शनं ॥
ॐ अनुयत ॥ ॥ कर्म
विलिखय ॥ ॐ मृ र्ववा
र्यययय ॥ ॥ अक्षरु
नं गतीं इ ग्वी इ दू या ७ ॥

ततः १ या य ग्विरु हामं ॥
इ ग्वेन ॥ उ य य मन कू
शका य ॥ थ ॥ ला ग या य
॥ ॐ रु १ स्था हा ॥ ॐ दं रु
ॐ रु व १ ० ० ॥ ॐ दं रु व
ॐ रु १ ० ० ॥ ॐ दं रु ला ग
ॐ रु रु व १ ० ० ॥ ॐ दं रु
उ व १ स्था हा ॥ ॐ ल नो
अ ॥ ॐ स ल नो अ ॥
ॐ अ या अ ॥ ॐ य त
दी गी ॥ ॐ स ल नो अ ॥

ततः १ य उ व्या हि सर्व ध
नक ॥ ॥ तत्ता या दू
दियु जन ॥ ॥ वलिः

हृदय दक्षिणार्ध ॥ ॥ द
शवलिय य द श हा य क
न ॥ य निवाल वलि थ व
थ व लु य स त य क न क
य ॥ ॥ ॐ मृ व इ ग्वे या
शनं ॥ ॥ अ थ य विग
भा र्जनं ॥ ॥ अ मृ व लु
या उ द क्षि ल न्द ला ॥ ॥

ततः १ सी य लु इ ति का न
य ७ ॥ ॥ मृ व स इ इ द्या
य न थ का व कं का व त
॥ य उ मान न इ इ थ
ला कं का व त य क ॥ ॥
सी य लु या य ॥ वा क ॥
य उ मान स य थ य ला
॥ य उ ल य ति ला उ ल
या अ सी य लु इ ति स
मृ दू र्क म सु ॥ ॐ ॐ म
म व र्क ॥ ॐ दं म रु ॥
ॐ अ या य स स ॥ ॐ
अ या य मा ना ॥ ॐ अ

त वत्सा ॥ ॐ उद्य नाजिभ
॥ ॐ अग्निः ॥ यि य ॥ ॐ य
य ॥ य ॥ यि य ॥ ॐ द वस्य
त्वा ॥ ॐ अग्नि नाहे ॥ ॐ
उ यदादिव ॥ ॐ उद्य य
तमस्त ॥ ॐ गी य त ॥ ॐ
नमा बद्ध ॥ ॐ अग्नि
त्रिभ ॥ ॐ य नत्वा ॥ ॐ
वथमा द्विती ॥ ॐ सम्य
नहि ॥ स चान्द्र ॥ न
इय ॥ सुतान्द्रा मय ॥

ॐ हिमस्य लाङ्गलाय
कृष्णवर्णं गृहीत्वा ॥ य
य यदानं ॥ असीसाय
॥ ॐ मन्त्रार्थसंज्ञ
॥ यीतव ॥ नमस्तुते
कृत्वा साय कात्रय ॥
ॐ ज ॥ वेदायस्य यादा
संयुक्तं य ॥ ॐ
ग ॥ ऊर्ध्वार्या निविर्ज
॥ दय मे भद्र वीनां ॥
अग्निस्तु मा वलिशास

विष्णु भगवत् ॥ नित्यानन्द
॥ अमृतमथनात्यन्तं ॥
कोमात्रीमयू ॥ ॐ द व
य निममलुल निवसि
त सोम्य यन वासुकी ।
यात्री वा रुययालियल
वधव सय्या रुभा लीह
ती ॥ गङ्गी लायम गी
ययालुधवलं ॥ निखे
लं महा ॥ गी हिती ॥ ॐ
यीर्लमक रासन स्मिता
महं सुधीतमानं सदा
॥ ॐ ग ॥ उद्य वती महा
यन वत्र देव ॥ सदा या
यक ॥ गङ्गा ॥ उद्य तभा
महामक नग ॥ यायान
क ॥ या गङ्गा ॥ मृकामा
लयने विरुषित न सद्रु
क्री वने रूषिते दवाय
वत्र ॥ ॐ वि गोलवदना
निर्लनवी वासुकी ॥ का
ल वषट्कु मयो ॥ ॐ

किं निरविचलदाहास्यसं
पृष्ठमस्तु वदन्ताः सति
विद्यासकननृपतग्रीध
रुर्वेनीयजाः स्यात् स नाना
यात्तनीयाः १ पुहककुसुम
नं काव्यभासाथयुक्ता
नित्यात्माहयभाद नि
वसतुसतर्त सत्यजाय
व्यसका ॥ गवः ४ श्रीनव
दाष्टाः स्य विद्याः स्वाचा
यसं स्मिताः १ यजान्य
४ कालवर्षायाः १ गः ॥
॥ अष्टाष्टयिवीतथा ॥
यायालिनिममस्तुष्टुद
य ग्रामनिनाजामहीमी
नायाः ४ यचननु धनू म
हिवाः ४ कायाथिभास्त्राति
दा चोनाः ४ सङ्गतिगपु
यः १ पुनृपतयः ४ नदिस
कासासनाः ४ कालनित्य

कथानक ४ लह ४ भाव
र्यनुमंदाः ४ सदा ॥
सकः ४ सक्तु निनननसूक
तिना ॥ अष्टगंधादि ॥
उं वानिवाह लानसंयुध
मस्तु यजमानस्यति ॥
वाक्मलन पुतिवचनी ॥
उं मस्तु ॥ अतिस्त्राय ॥

कलहाकुलुनागमस्तुल
श्रुदि ॥ श्रीगीर्वादि ॥ उ
कायगीत विसर्जन ॥
पुलीताहिषक ॥ ॥ कू
॥ अतनं स्वस्ति कलिश्व
१ ॥ यजमानत्वं स्वदा
३ ॥ निमिर्दितादियाय ॥
श्रुतिश्चकचन्दनसिद्ध
न ॥ सगुल्लमीर्वादि ॥
यं चमस्तु का विय ॥ स
रु अत्रतिपुतिष्ठाया
य ॥ नजमस्तु लदगर्न

नमस्कृत ॥ ॥ यउम
 हावले. लंखरुयर्थ
 काया उआग नमालः
 काया तं ॥ ॥ यिहि
 यावाक ॥ आदो (ममात्
 विद्याक्षी. रुमीया स्थन
 यायव. न किहतादया
 सर्व. ममदह उलं नः
 च ॥ सुवर्तुन उगीमाः
 हि मृ. मय (नेलदाले
 उ। यतीरु. यात्रिधना
 यी दव (मे वाकृ क्षम्यव
 ॥ ॥ उं थियावाकृ ॥
 यानीय यल लोकेषु या
 वनं यनर्ममदी। या नीय
 स्तयदानं न किहवति
 मं ग्वती ॥ ॥ नागं द्यः
 थवथव दिगस. पूर्वनि
 मतयक ॥ मूलनागं द्य
 उं थिइनसा. उं थिगल
 हं या. वं विनं शवनं तः
 यत गुलिधे जा न्कय
 क इना ॥ ॥ यूलिइ

लसा. पूर्वलि या धजा थम
 कावनं त ॥ ॥ हिति इन
 सा. यिहिर्मं गल थव नः
 त ॥ ॥ थत विधियनिया
 ति ॥ ॥ तत दूऊहाय
 कय उमानं न. दूऊया
 दाव. वन्दन. सिन्दूर. य
 थ. धूप. दीप. यूऊ.
 गं रवस. साइइतया दय
 ऊहाय. उं थिइसा. यष
 लिसा. याक्षलतया दय
 ऊहाय माल. जाय १०८
 क्षय ॥ उं नागया मं ल
 कानिल ॥ अणमं आदि ॥
 नमस्कृत यादा विज्ञाव
 क ॥ ॥ न्यासलिकाया
 द. सुयसा निधाय ॥ उ
 लकृ. लु विमूर्तनी ॥ उ
 लकृ. लु यालंख उं थिः
 इना सा यिरुय गुं थिस
 लयाव. दू. लु ससक य
 य ॥ ॥ यूलिइनसा
 धजा थम ससक यय ॥
 यिति इनसा यितिर्म

गलसल्य ॥ वरुषकृ
 थवने ॥ ॥ थतध
 नकाव ईरा विखा
 य ॥ ॥ थतधूनकाव
 यिति इरा वाकृष
 यनिसकली लखतान
 कमाल साध मनवदि
 यादरु ॥ ॥ वव उवसुली
 रतयाव उवसुहिता
 ईथदाव वाकृषक
 र्गव उव विधाय वियमा
 लविलसा ॥ ॥ थव
 थति धूनकाव कोमारी
 जागयाय ॥ ॥ कुमारीयुजा
 ॥ वन्दनादि यथ विधान
 न ॥ जायला ॥ नमः
 स्तुतयादाव विसुर्जन
 याय ॥ लिहावलदास
 न ॥ अरुसकाय ॥ युजा
 यादा थय स समयका
 यमाल ॥ ॥ सकल
 र्विय ॥ ॥ ॐ ति कुमा
 रीयुजा विधि ॥ ॥ याक

इमयादा इ कुमारीयु
 जा ॥ ॥ ततावा
 दिहाईकानय ॥ ॥
 यजनादिया नन ॥ य
 थग किं असादिसुंद
 द ॥ ॥ ॥ थकु
 ता लखकायमगद ॥
 थकु कुकु युजहायाव
 आगनमालकतयाव
 धाहित आदिन वियाव
 लखककाय ॥ ॥ ॥
 ॐ ति कुल यमिळा कु
 लयकु विविधदति ॥
 समाया ॥ ॥ ॥ ॥

अथकुस कुलयकु धून
 काव उवकु वलकि
 हा मयायमाल ॥ ॥
 ठिकमय वियातिथ
 युजायाय ॥ मूलकल
 कु (मउ) मं विसुतयाव
 युजायाय यनसकन
 गलवत्यादिरु लकन
 वाय ॥ ॥ अरुतियाय

ऊलमलुलमलुययार्त
मालकास्तुवियमालरु
शविमिथ्यायय॥ ॥य
वधन्यादि॥ ॥यूयुया
य॥ दशवलिस्तुय॥ ॥
कोमानीयूजायाय॥ वल
द्विहोमयायउथासुमः
तव॥ भवथायसुत
न॥ ऊलयरुव रुतावि
नधूनकाइ॥ वद्विया
दुइ॥ नतामयागसाद
शवलिअनिकायाधु
नकावस्तुय॥ कोमानी
यूजास्तुय-रुयलरुः
तल॥ नयालमूमाल॥
अरुधकादिइका नय
लता॥ ॥ ॥थगिसर्व
शान्तिइवइनी॥ याद
इ-मयादीइथथकर्म

२००॥ न्यासं ॥ लं य धि वी
 तत्वाय स्वाहा ॥ वं आ य त
 त्वाय ०० ॥ नं तं उ तत्वा
 य ०० ॥ यं वा य तत्वाय
 ०० ॥ हं आ शी तत्वाय
 ०० ॥ ॥ ॐ तिर्यं व तत्वा
 ॥ ॐ ॥ य न ४ व दि गी रु
 लं न्यासं ॥ नं य धि वी
 तत्वाय ०० ॥ वा द य ४ ॥
 लं आ य तत्वाय ०० ॥ लि
 (ग) ॥ हं तं उ तत्वाय ००
 ॥ रु दि ॥ सं वा य तत्वाय
 ०० ॥ मू र्ख ॥ यं आ का श
 तत्वाय ०० ॥ मि त्र सि ॥ ॐ
 ग न्ध तत्वाय ०० ॥ वा द य
 ४ ॥ वं न स तत्वाय ०० ॥ लि
 (ग) ॥ लं नू य तत्वाय ००
 ॥ रु दि ॥ नं स्य र्ज तत्वाय
 ०० ॥ मू र्ख ॥ यं श व त
 त्वाय ०० ॥ मि त्र सि ॥ ॥
 मं उ य रु तत्वाय ००
 ॥ लि (ग) ॥ हं वा य तत्वा

य ०० ॥ वा यो ॥ वं वा द तत्वा
 य ०० ॥ वा द य ४ ॥ हं वा सि
 तत्वाय ०० ॥ वा (ले) ॥ वं वा
 क तत्वाय ०० ॥ मू र्ख ॥ वं
 आ कृ म तत्वाय ०० ॥ मि
 त्र सि ॥ नं द्या ल तत्वाय ००
 ॥ वा (ले) ॥ ॐ डि क्रा तत्वा
 य ०० ॥ डि क्रा यी ॥ दं व
 दू तत्वाय ०० ॥ वा नू वि
 ॥ थं लं क त्वाय ०० ॥ सर्व
 (ग) ॥ तं अ त तत्वाय ०० ॥
 क ह्यु य ४ ॥ लं म न तत्वा
 य ०० ॥ रु दि ॥ हं वृ द्धि त
 त्वाय ०० ॥ रु द य ४ ॥ ॐ
 अ र्द का न तत्वाय ०० ॥ स
 र्व म य ॥ ॐ यु रु मि तत्वा
 य ०० ॥ सर्व (ग) ॥ टं नि
 य मि तत्वाय ०० ॥ सर्व
 म य ॥ नं का न तत्वाय ०
 ० ॥ सर्व (ग) ॥ सं क ला त
 त्वाय ०० ॥ सर्व (ग) ॥ ॐ
 ना न तत्वाय ०० ॥ रु दि ॥
 रु वि द्या तत्वाय ०० ॥ रु
 दि ॥ वं क ला तत्वाय ०

०॥ ह्रदि ॥ दं माया तत्त्वा
य ०० ॥ ह्रदि ॥ यं शुद्ध त
त्त्वा य ०० ॥ ह्रदि ॥ गं वृ
ध्वन तत्त्वा य ०० ॥ ह्रदि ॥
खं सदा जिव तत्त्वा य ००
॥ जीवायी ॥ कं गं कि तत्त्वा
जिव सि ॥ अं जिव तत्त्वा
य ०० ॥ ॥ वृत्ति विदि
गं ति तत्त्वा या सी ॥ ३७ ॥

ततः यं विमं ति तत्त्वा
न ॥ अथ यं ॥ ॥ उं उं
पृष्ठा तत्त्वा यत्त्वा ॥ या
दया ॥ लं आय तत्त्वा य
०० ॥ लिं ॥ हं तत्त्वा
य ०० ॥ ह्रदि ॥ सं वा
य तत्त्वा य ०० ॥ मूख ॥ यं
आकाश तत्त्वा य ०० ॥
जिव सि ॥ गं उय लुत
त्त्वा य ०० ॥ लिं ॥ रं वा
य तत्त्वा य ०० ॥ याद ॥ यं
याद तत्त्वा य ०० ॥ यादया
॥ रुं या वि तत्त्वा य ०० ॥
या ॥ यं वा कत्त्वा य ०

०॥ सर्वा ॥ तं ॥ अत
तत्त्वा य ०० ॥ कलुषा ॥
लं मन तत्त्वा य ०० ॥ ह्र
दि ॥ रुं वृद्धि तत्त्वा य ०० ॥
ह्रदया ॥ उं अहंकार त
त्त्वा य ०० ॥ सर्वमं ॥ अं य
हृति तत्त्वा य ०० ॥ ॥
॥ सर्वा ॥ टं नियति
तत्त्वा य ०० ॥ सर्वमं ॥
॥ अं कार तत्त्वा य ०० ॥ सर्वा
॥ अं कला तत्त्वा य ०० ॥
सर्वा ॥ उं नाग तत्त्वा य
०० ॥ ह्रदि ॥ रुं विद्या तत्त्वा
य ०० ॥ ह्रदि ॥ रं कला तत्त्वा
य ०० ॥ ह्रदि ॥ दं माया त
त्त्वा य ०० ॥ ह्रदि ॥ यं शुद्ध
तत्त्वा य ०० ॥ ह्रदि ॥ गं वृ
ध्वन तत्त्वा य ०० ॥ ह्रदि ॥
खं सदा जिव तत्त्वा य ००
॥ जीवायी ॥ कं गं कि तत्त्वा
य ०० ॥ जिव सि ॥ अं जिव
तत्त्वा य ०० ॥

ॐ तिर्यय विंशति तत्त्व ॥
२३ ॥ ॥ ॥ ॥

यूनत्रय विंशतिकला त
त्वनसं (मिश्र) ॥ ॥ अं
अमृता कलाये नमः ॥ मि
त्रसि ॥ अं मानदा कलाये
२ ॥ मय ॥ ॐ यूमा कलाये
२ ॥ दक्ष नय ॥ ॐ उष्टिः
कलाये २ ॥ वाम नय ॥ उं
यष्टि कलाये २ ॥ दक्ष (म)
य ॥ उं वतिकलाये २ ॥
वाम (म) ॥ अं धृति क
लाये २ ॥ दक्ष नासायुट ॥
अं जमिनि कलाये २ ॥ वा
म नासायुट ॥ उं वलिक
कलाये २ ॥ दक्ष ग (लु) ॥
उं कानिकलाये २ ॥ वा
म ग (लु) ॥ उं अत्मा क
लाये २ ॥ उं उष्टि ॥ उं नि
या कलाये २ ॥ अ (म) ॥
उं वीतिकलाये २ ॥ उं
दक्ष यकी ॥ उं अं गं कला
ये २ ॥ अ (म) दक्ष यकी ॥

अं यूमा कलाये २ ॥ मय ॥
अं यूमा मृता कलाये २
॥ मृद्विस्तन ॥ ॥ ॐ ति
साम कला ॥ १३ ॥ ॥
यून ३ दक्ष कला न्यास
नसं (मिश्र) ॥ कं हं तयिनी
कलाये नमः ॥ दक्ष वा ३ ॥
यवं तयिनी कलाये २ ॥
दक्ष कथय ॥ गं हं यूमा क
लाये २ ॥ दक्ष मलिर्व (ध) ॥
यं यं मनी विकलाये २ ॥
दक्ष गुलिमूल ॥ दं नं द
लिनी कलाये २ ॥ दक्ष गु
ल्या (य) ॥ वं धं वृचिकलाये
२ ॥ वाम वा ३ ॥ उं दं सू
मा कलाये २ ॥ वाम कथय
य ॥ उं यं सगदा कलाये
२ ॥ वाम मलिर्व (ध) ॥ अं नं
वा विधी कलाये २ ॥ वाम
गुलिमूल ॥ अं लं वा विनी
कलाये २ ॥ अं गुल्या (य) ॥
उं दं ध्रुवि (ध) कलाये २ ॥
दक्ष कथय ॥ उं उं न्मा क
लाये २ ॥ दक्ष जा न् ॥ ॥

॥ ॐ तिदादशस्तानकला
१२॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

एनईशकलागलनसं
(श्रीश्री॥ यं धूम्राधिकला
येनमः॥ दक्षगुल्ल॥

नउष्माकलाये२॥ दक्ष
जानू॥ लंकालिनीकला

ये२॥ ह्रीं॥ वंकालिनी
कलाये२॥ दक्षकक्षा॥

शं विस्तृलिनीकलाये२
॥ वामकक्षा॥ वंसूरीक

लाये२॥ वामजानू॥ सं
सूत्रयानकलाये२॥ वा

मगुल्ल॥ हं कपिलाये२
॥ वामगुलिमूल॥ लंका

शवाहकलाये२॥ वामा
गुल्ल॥ हं कक्षवाहक

कलाये२॥ मूर्ध्निस्तानसं
र्वा॥ ॐ तिदादशकला

१०॥ ॥ अक्षरिगति
कला॥ मानकान्यसं०
॥ ३५॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

एन॥ वडं (गनसं (श्रीश्री

॥ अं अमृकदवतायायं
नं लं वं गं मं सं हं कं अ

स्मायहृ॥ अं अमृकद
वताया कं ऊं अं हं दया

यनमः॥ ॐ अमृकदव
तायायं ऊं ॐ निजसं०

०॥ ॐ अमृकदवताया
हं ऊं ॐ निजवायेकोषट्

॥ नं अमृकदवताया नं
ऊं कं ववायहं॥ ॐ अ

मृकदवतायायं ऊं ॐ
नयययायकोषट्॥ अमृ

कदवतायायं १० अं अ
स्मायहृ॥ ॐ वं कलां गु

लिन्यासनसं (श्रीश्री॥

तताजीर्वन्यासंकात्रय०॥
कृष्ण॥ वलददिल्लनस्य

॥ सतयतिकोरा न
यलयालयतिकोरा ददं॥

अस्ययालयतिकोरा मनस्य
वक्रविष्णुनिवजवय०

निजसि० ॥ गंधदसामाथ
वैलीनिकुन्द० मूरययेत

अरु यथा लक्ष्मिः यथा
दवता हृदि अं वा डं उं
शक्तिः कां की ल कं म मया
ल य गि म्मार्थं ॐ ह्यार्थं सि
हि द्वा र्थे वि नि या गः ॥
अं उं कां कं उ अं य
थि श्र य ऊ वा चा का म
न उं ह द या य न म ॥
अं उं कां ॐ वं उं ॐ
शं द स्य शं नू य न स गं न
ल न उं गि न सि स्या हा ॥
अं उं कां उं उं उं उं
ल ल क व द्वा र्जि का या ल
ल न उं गि न वा ये यो षट्
॥ अं उं कां उं गं उं वं
वा क्का लि या द या यू य ल
ल न उं क व वा य दूं ॥
अं उं कां उं यं उं उं व
व ना दा न म न सा वि सः
गं नि न्दा ल न उं नं
य या य यो षट् ॥ अं उं कां
अं यं १० अं यं का ल्मा हं
का न वि ल्मा ल न उं १२

सु य रु द् ॥ ॥ ॐ ति व
उं नं वि न्म स्य ॥ ॥ अं ना
ला रि या दा नं ॥ कां मूः
द्वि दि ह द या नं ॥ वा
य कं द ल्मा आ य ॥ ॥ न
का भू धि रू या ता नू स व
रू ल स गं उा धि क ना के
१ या शं का द लु मि रू रु व
म लि गु ल म य दू गं चा य
वा ल्मा वि डा ल्मा सु क या
लं वि न न सि ता यी न व
का र हा या द वी वा ला क
य लु रि व रु सु य क जी या
शक्तिः य ना न ॥ ॐ ति
ध्मा ल्मा ॥ शं न न म ॥ म
ध्मा ये न म ॥ ध्मा ये न म
॥ १२ ले न म ॥ सि द्धे न
म ॥ द्वा द्धे न म ॥ १२ द्वा
२॥ नं ध्मा ये २ ॥ स न स ल्मा
२ ॥ त इ य वि ॥ अं उं कां
यं नं लं दं नं वं सं हं लं
कं अ मू क द व स्य या ल्माः

ॐ ह्रीं पाणि ॐ ह्रीं गिरि ॥ श्रीं
 १२ अमरक दवस्य जीव ॐ
 ह्रीं जीव ॐ ह्रीं गिरि ॥ श्रीं १२
 अमरक दवस्य सर्वद्विया
 सिवा दान श्रेष्ठ निद्रिः
 याति नमः ॥ श्रीं श्रेष्ठ निद्रिः
 कोद्याल ॐ ह्रीं गलसुख
 विन निद्रिः सुखाहा ॥ श्रीं
 श्रीं उयिला ३ ॥ ॐ गि
 याति यतिष्टा विधिः ॥ ॥

सुद्धिः ॥ श्रीं वट ५ आना
 दिक् ॥ अथायनात्मयू
 ऊर्न ॥ दवस्य नूयात्मक
 विविह ॥ ॥ ॐ श्रीं धर्मा
 दि अष्ट ॥ गयू ऊर्न ॥
 नन्दिमाहाकालादि यत्
 दशयू ऊर्न ॥ ॥ तत्ता
 ॐ उादि दश लोकया
 लयू ऊर्न ॥ ॥ तत्ता अ
 सन ॥ ॐ श्रीं श्रीं नदार्तु
 वायनमः ॥ ॐ श्रीं स
 नाय २ ॥ ॐ श्रीं क्षादि मः
 क्षादि ॥ वृषासनाय २ ॥
 सिंहासनाय २ ॥ ॐ श्रीं
 श्रीं श्रीं गिरि ॥ गय आन
 रु २०० ॥ ॥ श्रीं ॥
 ॐ श्रीं यक वक दश उ
 ऊर्न ॥ गिरि यक नयना क
 ल ॥ यूर्वयाता नृक्षरुः
 व दकि ॥ लनील ॥ श्रीं
 त ॥ उरु यक व लुक्
 यन्त्रि म ॥ यत स निरुः
 उरु सुटि कर्म का श्रीं
 य व वक म रु यर्न ॥

ॐ नमः ॥ गिरि ॥ ॥ त
 ता गिरि यक विधि नि
 द्यात ॥ ॥ श्रीं वम ॥ सु
 यार्च ॥ अथायन मूलमर्च
 लवर्त मदि न्यासः ॥ ॥ मू
 लवर्त ॥ गनार्चया ययूजा
 ॥ श्रीं ग ॥ उ ययूज ॥ श्रीं
 वाक् ॥ धन मूडा ॥ ॥ श्रीं
 गिरि नाथाय विमरुस
 रुन्दाय श्री महि ॥ तन्नान
 उ ॥ यथा दया ॥ सर्व उ
 यथा मूर्त ॥ तत्ता रुत

कयदीवालचन्द्रः ॥
तारुं सर्वरूपं ली। मूलतः
मन्त्रयन्त्रं गीतमाली
चदकिं ॥ यागं रुयं
यनदी वदी वदी गवाः
मक। महातका महं
नि सर्वसिद्धिं न्यका ज
ली। सर्वयायविनिर्मक
सुखं यन्मन्त्रं।
उर्वधामामहादयः
सर्वकामरुलपदी।
॥ ॐ तिष्ठ नमः ॥
विचित्रं ॥ ॥ ततामूल
मन्त्रं लस्युक्तं ॥ ॥ त
तकं गीतं ॥ ॐ ऊं वाः
मादिगकीति ॥ ॥
मन्त्रमन्त्रं ॥ अथ य
कयाली गीतं वलादि
॥ ततावतिगीयं ॥ व
तिनिशानिनी ॥ ॐ ऊं अ
वकुं येनमः ॥ ॐ २ वां
घं ॥ २ वं महाना
साये ॥ २ ऊं समसा

येनमः ॥ ॐ ऊं धं इमं रवा
ये ॥ ॐ ऊं धां वलाये ॥
॥ ॐ ऊं नं वलाये ॥ ॐ ऊं
दी वलाये ॥ ॐ ऊं
धां वलाये ॥ ॐ ऊं नं
साये ॥ ॐ ऊं धां
नाये ॥ ॐ ऊं नं महाव
लाये ॥ ॐ ऊं नं जयाये
॥ ॐ ऊं नं विजयाये ॥
॥ ॐ ऊं नं श्रुतिगाये ॥
॥ ॐ ऊं नं श्रुतिगाये ॥
ये ॥ ॐ ऊं नं समसाये
ये ॥ ॐ ऊं नं विद्रुपाये
॥ ॐ ऊं नं सुसाये ॥ ॐ
ऊं नं वाकाये ॥ ॐ
ऊं नं वाकाये ॥ ॐ
ॐ नं वाकाये ॥ ॐ
ॐ नं वाकाये ॥ ॐ
ॐ नं वाकाये ॥ ॐ
ॐ नं वाकाये ॥ ॐ
ॐ नं वाकाये ॥ ॐ
ॐ नं वाकाये ॥ ॐ

सुहृत् १॥ ॐ जं डं हृद क
 लो २॥ ॐ जं नूं हृद डाय २॥
 ॐ जं थं हृद ही माये २॥
 ॐ जं डं ४ हृद डिकाये
 २॥ ॐ निवति हि या गी॥
 मूलमकुन विधा ॥ हृदय
 वायव्य गिरि सिनेर्ष्य
 गिरि स्वा ॐ गीर्ण कक्व
 श्रुत्वा ॥ मंग मध्याश्रु
 से चतुर्दिश ॥ ततश्च ति
 थि ॥ ग्रह नकेनै वानन
 गोष्ठी ॥ योगी मूर्ध्नि ॥ ॥
 मूलमकुन ॥ तत ॐ न्यादि
 लांक बाल १० ॥ दान व
 दि जयादि श्रुत्वा ॥ गी
 न ॥ मूलमकुन ॥ गीर्ण
 श्रुति गां गदिहे नव मा
 गृकामहिता ॥ हृदु कादि
 हे नव ॥ चंदना कृत ॥ श्रु
 था न मूलमकुन ॥ ॥ श्री गी

स्वास्व चंदम हारे न वाय
 सदा हि वाय न म ॥ ॥
 विर्यां जलि विधा ३॥ श्री
 वाक्कुलिं गीर्णानिमूडा ॥
 ॐ जं नैव आदि ॥ तता
 वलि ॥ केष सर्वरुत ॥ व
 दूक ॥ या गिनी ॥ ॐ जं
 पूर्वदि गीर्णानिमूडा गी
 नूदथा गिनी ग्रह नके
 न नागि यक्त गन्धर्व
 नागस रुत थत विधा
 व वताले ॥ ॐ मां व
 लि पूजां गृह गृह न
 म ॥ स्वाहा ॥ ॥ जाय ॥ ॐ
 १०८ ॥ ॥ श्री ॥ श्री काल
 चानेनाले त्यादि ॥ श्री का
 (१) लिं गमि त्या ३४ पृथि
 वी तस्य यीठिका ॥ श्री का
 ११ सर्वरुतानां लीय न
 लिं गमू अत ॥ गीर्ण न
 यमद गीर्ण सर्वरुतान

धृति॥ ॥ यत्र लना गजा डा या य द ॥ ॐ या ष्वा यालु धना
॥ य ता च न ॥ स्व नी त न ॥ य वा य म ष्वा न त म ग स्य ॥ स य्य स्य ॥ ॥









८४॥ ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

मलेक ॥ खानवाक ॥ शंकाक ॥ काकावीहिदे ॥ शंकाक ॥
 सरोध ॥ म्हाण मस कलेगुले ॥ का मुका काभार तिदि मुनि
 पलेमास धुक्कि प्रमाणन ॥ पिलास ॥ अर्क ॥ उर्द्वेन ॥ अयले ॥
 वर्तन ॥ समीक ॥ वनसि ॥ अयामान ॥ आलेसि ॥ मर्मलेसि ॥
 आले ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥
 गुमुलिङ्गने ॥ सुर्वोषधी ॥ पद्मकला ॥ नूयकला ॥ ६० ॥ कुरु
 ॥ शिर्षगु ॥ समरव ॥ शानदूषा ॥ कुरुम ॥ श्रीरवगु ॥ अमुनि ॥ नाजिक

ले ॥ उरुले ॥ मला ॥ कसुलि ॥ लवद ॥ कर्कुर ॥ डिगखले ॥ मलेव
 ॥ दिखिली ॥ गु ॥ १० ॥ ११ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥
 म ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥
 म ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥
 ले ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥
 नवात ॥ मनव ॥ नालिकले ॥ दियारुले ॥ दि का अका ॥ १०८ ॥ अ
 दे याठ काठ ॥ शिर्ष ॥ १०९ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥
 म्हाणवासन ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥

१८३ पुनर्वनमः॥ नलिवृय विधमन॥ यद्गुयार्थं॥ ॥ कलशधुजा
 क यार्थं॥ अत्रार्थं न वलिविषयं क इ क इ ॥ वलिविषयं क य
 यद्गुयार्थं कलशधुजा क यार्थं वलिविषयं क यार्थं माल॥ उरुम
 ॥ मधुम॥ कनिक ॥ विविधयुक्तानि ॥ यद्गुयार्थं विविध ॥ वाक्य॥
 शिष्टिवादिष्वयान यामादयुनिष्ठासु वलुक्लेश धुजावगोरुननका
 रुणि यद्गुजि रुसुवदिः कनेशनदीयुवा क ककु शिष्टुयार्थं भुव
 नमः॥ विधमनधुयद्गुयार्थं वदार्थं॥ अद्रुणि च॥ यधमकर्म कर्मा

१॥ १८३ पुनर्वन॥ कलशधुजा॥ ॥ सलवक मलाशकं सवैकर्मयुसाधक ।
 कर्मासनवर्षयार्थं सनिधिकर्मादनं ॥ १८३ मकुल स्याधम ॥ ॥ य
 पुनर्वन॥ सवै धुजा मादाय पाथिद । १८३ कर्मासु निष्ठाधु पुनर्ग
 गमनायधु ॥ अरुमकुल विमर्शनं ॥ सिकनधुजादधुनि ॥ नलिविषय
 स्यं हगवलिसगस्य धुजायार्थं यचान वलुनाधमयनमः॥ वलुध
 न॥ यदात्रिगद्वि कृद्वा निम्नाश्वे गार्थं विविधममयार्थं ॥ दत्ताव
 सिग्गयति ययया विद्वामथ रुक्मजनमरु म्दो ॥ च१८३ पुनर्व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥